



# कैरली

2017-18

കൈരളി

KAIRALI



केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त का कार्यालय, कोच्चि

OFFICE OF THE COMMISSIONER OF CENTRAL TAX & CENTRAL EXCISE, KOCHI

केंद्रीय राजस्व भवन / C.R. BUILDING, आई एस प्रेस रोड / I.S. PRESS ROAD, कोचिन / COCHIN - 682 018



**केंद्रीय राजस्व दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक मीट**  
**Central Revenue South Zone Cultural Meet**



# कैरली

केन्द्रीय कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय

आई.एस. प्रेस रोड, कोच्चि -18

की

त्रिभाषी गृह पत्रिका

## Kairali

Trilingual Departmental Magazine

of

Central Tax & Central Excise Commissionerate

C.R.Building, I.S.Press Road, Cochin-18

विभागीय गृह पत्रिका

वर्ष 2017-18

प्रधान संपादक	:	के आर उदय भास्कर, केन्द्रीय कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त
प्रबंध संपादक	:	श्री अमरनाथ केसरी, संयुक्त आयुक्त एवं राजभाषा अधिकारी
संपादक (मलयालम रचनाएं)	:	श्री ई श्रीधर, अधीक्षक
संपादक	:	श्रीमती रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु, कनिष्ठ अनुवादक

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, इनमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है ।

## अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकर	पृष्ठ सं.
1	बलरामपुर की यात्रा	अमरनाथ केसरी	9-10
2	हम तो बेचारी भाषाएँ हैं	किरण शर्मा	11
3	लखनवी टुंडे कवाब की कहानी	रामेन्द्र सिंह	12
4	विजय परिभाषा	अशोक कुमार	13
5	ईमानदारी को प्रोत्साहन देने एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनसहभागिता	मनोज कुमार	14-18
6	न्याय और संघर्ष	निशांत ठाकुर	19
7	उलझनों और कश्मकश में ...	पूनम राठी	20
8	देश के प्रति मेरा कर्तव्य	मनोज कुमार	21-26
9	ऑगन चोरी हो गया	किरण शर्मा	27-28
10	ऐसी होती है माँ	नितेश	29
11	अँधेरे कमरे में रोज ....	महिमा दीक्षित	30
12	प्रेरणा श्रोत	अशोक कुमार	31
13	हिंदी की संवैधानिक स्थिति	राजभाषा अनुभाग	32-33
14	जून का महीना और बरसात	रोसेलिन जोस	34
15	यूनिकोड एक अद्भुत बात	राजभाषा अनुभाग	35-37
16	जन भागीदारी	मनोज कुमार	38
17	हिन्दी पखवाड़ा समारोह-2017 -एक रिपोर्ट	राजभाषा अनुभाग	39-41
18	चुटकुले	राजभाषा अनुभाग	41-42
19	SpasibaMoskva	Anand V.K.	43-46
20	फोटो-ओणम समारोह 2017, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस यात्रा 2018, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2018, चित्रकला-सुनयना कृष्णन, एकजुटता के लिए फुटबॉल शूटआउट, स्वाच भारत अभियान, कैरली पत्रिका विमोचन, हिन्दी पखवाड़ा समारोह-2017, विष्णु 2018, जी एस टी मंडल उदघाटन, जी एस टी उदघाटन (मुख्यालय)		47-54
21	बच्चों की चित्रकला	पावना प्रदीप, ईश्वर यास्मिन, अयान फिरोज हुसैन, कैथरीन मोनिका जिवसन, पवित्रा एस शेर्मा	55
22	हमारी खेल सितारे	खेल अनुभाग	56-59
23	I had a friend	Jacob George	60
24	Out There	Rohit Ramachandran	61
25	നീതി ദേവതയോട്	അപർണ്ണ ശങ്കർ	62
26	വൈദ്യൻ	ജിമ്മി ജോസഫ്	63-67
27	വർണ്ണക്കൊഴ്ചകൾ	ഗീതാകുമാരി	68
28	എന്താണ് ഈ -വേ ബിൽ ?	എം ആർ രാമചന്ദ്രൻ	69-72
29	फोटो -गणतंत्र दिवस		73
30	फोटो-केंद्रीय राजस्व दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक मीट, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस		74

## संरक्षक के संदेश



यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि आपके कार्यालय से राजभाषा गृहपत्रिका 'कैरली' का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने का प्रमुख उद्देश्य है हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना। इस पत्रिका में हिन्दी के अलावा मलयालम एवं अंग्रेज़ी के लेख भी शामिल हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आप सबको मनोरंजक प्रतीत होगा और कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका की सफल प्रस्तुति के लिए मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को शुभकामनाएं देता हूँ।

पु. नागेश्वरा राव

पुल्लेला नागेश्वरा राव, भा.रा.से.  
मुख्य आयुक्त, तिरुवनंतपुरम क्षेत्र

## प्रधान संपादक की कलम से



विभागीय पत्रिका “कैरली” प्रकाशित करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है । यह निश्चय ही आयुक्तालय में कार्यरत अधिकारियों /कर्मचारियों एवं उनके बाल-बच्चों को अपनी प्रतिभाएं व्यक्त करने का मंच प्रदान करती है । मैं चाहूँगा कि आयुक्तालय में कार्यरत सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी में काम करके राजभाषा-नीति के कार्यान्वयन में सक्रिय सहयोग दें । इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़े अधिकारियों /कर्मचारियों को उनके परिश्रम के लिए बधाई देता हूँ । मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

उदय भास्कर

के.आर.उदय भास्कर, भा.रा.से.

आयुक्त

## संदेश



मुझे इस बात पर खुशी हो रही है कि विभागीय पत्रिका कैरली का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत के संविधान ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। अतः अधिकारियों और कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि विभागीय पत्रिका का प्रकाशन सरकारी काम-काज हिन्दी में करने के लिए प्रेरणादायक होगा।

पत्रिका को अपनी रचनाओं से समृद्ध करने वाले रचनाकारों का अभिनंदन करता हूँ और इस प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

अमरनाथ केसरी, भा.रा.से.

संयुक्त आयुक्त एवं राजभाषा अधिकारी




## संपादकीय

“भाषा वह साधन है, जिससे हम अपने मन के भाव दूसरों पर प्रकट करते हैं।”

भाषा विचार - विनिमय का साधन ही नहीं बल्कि वह हमें सोचना भी सिखाती है। हमारे सारे बुद्धि, वैभव, कला, साहित्य, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकार भाषा से निर्मित हुए हैं। इसी के माध्यम से ज्ञान का भंडार अनादिकाल से संचित होकर हम तक पहुंचा है। भाषा संस्कृति की देन है और संस्कृति की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है। हमारे भाव, विचार, अनुभूतियां, आशाएं, आकांक्षाएं, हर्ष -विवाद आदि भाषा के माध्यम से ही व्यक्त होते हैं। जनमानस भाषा में प्रतिबिम्बित होता है।

भारत एक बहुभाषी देश है जिसकी सम्प्रेषण -व्यवस्था में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आदिकाल से ही इसका प्रचलन बोलचाल की भाषा, संपर्क भाषा, साहित्य की भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में निरंतर चला आ रहा है। भारत की स्वतन्त्रता के उपरांत संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया, जिसके अनुसार प्रशासन के विभिन्न प्रयोजनों के लिए हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास करने और उसे प्रायोगिक स्तर पर समर्थ और सक्षम बनाने के लिए सरकार द्वारा किए गए अनेक उपक्रमों और प्रयासों से हिन्दी ने अनेक सोपान पार किए हैं। विभागीय पत्रिका का प्रकाशन भी हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए एक कदम है।

इस पत्रिका में हिन्दी के साथ-साथ मलयालम और अँग्रेजी के भी लेख और कविताओं आदि का समावेश किया गया है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारा प्रयास है कि सभी भाषाओं के बीच सामंजस्य बनाए रखा जाए। इस पत्रिका के संबंध में आपके मूल्यवान विचारों और आलोचना से हमें अवश्य अवगत करायें, ताकि कैरली के आगामी अंक को और अधिक सुरुचिपूर्ण और उपयोगी बना कर आपके हाथों में सौंपा जा सके।

  
रोसेलिन जोस थॉमस कोरुतु  
कनिष्ठ अनुवादक





## बलरामपुर की यात्रा

वर्ष 2012 की बात है | उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में इलेक्शन ड्यूटी लगी और पता चला कि आवंडित विधान सभा क्षेत्र बलरामपुर जिला के अंतर्गत है |

अब तक मैं बलरामपुर सिर्फ प्रसिद्ध 'बलरामपुर चीनी' के कारण जानता था | उत्तर प्रदेश के नक्शे में नेपाल से सटा यह क्षेत्र अब मेरे लिए महीने भर का प्रवास क्षेत्र बनने वाला था | मन में एक स्वाभाविक कौतूहलता सी थी | नए जगह पर अनायास पहुँचने का एक अलग ही रोमांच है |

लखनऊ एयरपोर्ट से उतरकर बारांबकी, गोंडा के रास्ते बलरामपुर शहर में प्रवेश करने पर लगा कि सचमुच किसी चीनी मिल के अहाते में प्रवेश कर रहा हूँ क्योंकि पूरा शहर ईख से लदी बैलगाड़ियों से भरा पड़ा था | पूछने पर पता चला कि मुख्य सड़क के बगल में ही बलरामपुर चीनी मिल है |

बलरामपुर पहुंचकर पता चला कि ऐतिहासिक बौद्धकालीन श्रावस्ती वहां से सिर्फ 30 किलोमीटर की दूरी पर है | पश्चिमी राप्ती नदी के किनारे बसा श्रावस्ती महात्मा बुद्ध के जीवन से अत्यधिक जुड़ा है | कहा जाता है कि कोशल राज्य की राजधानी श्रावस्ती में बुद्ध ने अपने जीवन के पच्चीस चौमासा (वर्षा ऋतु के चार महीने) बिताए | इस प्रकार से श्रावस्ती प्राचीन भारत की एक ऐसी जगह है जहां बुद्ध ने सर्वाधिक समय बिताया और सबसे अधिक उपदेश दिए |

प्राचीन श्रावस्ती के अवशेष सहेठ - महेठ नामक जगह पर प्राप्त हुए जिनमें कई स्तूप हैं | जैसे कि अंगुलीमाल स्तूप, अनंतपिंडक स्तूप आदि | यहाँ जैन तीर्थंकर स्वामी संभवनाथ के प्राचीन मंदिर भी हैं | यहाँ के पुरातात्विक अवशेष मौर्य तथा कुषाल कालीन हैं | वर्तमान में दुनियाँ भर के देशों ने, जिनमें थाईलैंड, श्रीलंका, दक्षिण कोरिया, म्यांमार, तिब्बत, चीन शामिल हैं, यहाँ बौद्ध विहारों की स्थापना की है |

श्रावस्ती की यात्रा सचमुच रोमांचकारी है क्योंकि यहाँ के कण-कण में महात्मा बुद्ध की दिव्य उपस्थिति का एहसास है | यहाँ के जेतवन विहार में भ्रमण करते समय आप महसूस करेंगे कि कभी महात्मा बुद्ध इसी राह से गुज़रे होंगे |

नेपाल से सटे होने के कारण यह एक तराई क्षेत्र है तथा नदियों के कटाव के कारण यहाँ एक विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र की रचना हुई है | पानी की प्रचुरता के कारण विभिन्न

पक्षियों की जाति यहाँ देखने को मिलती है | भारत से विलुप्त होते जा रहे गृध्र प्रजाति को यहाँ फलते-बढ़ते देखकर सुखद आश्चर्य का अनुभव हुआ | यहाँ सारस पक्षी भी बहुतायत में पाए जाते हैं |

बलरामपुर जिला में स्थित तुलसीपुर कभी अवध अधिशासित राज्य हुआ करता था जिसका क्षेत्र भारत व नेपाल दोनों में फैला था | तुलसीपुर की रानी ईश्वरी कुमारी देवी का नाम 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णिम अक्षर में लिखा है | उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया जिसके कारण उन्हें नेपाल भागना पड़ा और वे शहीद हो गईं |

तुलसीपुर देवी पाटन मंदिर के कारण विख्यात है और यह मंदिर शक्तिपीठों में से एक है | यहाँ वार्षिक मेले का आयोजन किया जाता है जहाँ भारत व नेपाल के दूर क्षेत्र के लोग हिस्सा लेते हैं |

यह यात्रा वृत्तांत अधूरी रह जाएगी यदि इस क्षेत्र के चीनी मिलों की चर्चा न की जाए क्योंकि चीनी मिलों ने इस क्षेत्र को वर्तमान काल में नई पहचान दी है | बलरामपुर स्थित बलराम चीनी मिल्स लिमिटेड भारत में सर्वाधिक चीनी उत्पादक मिल है |

सचमुच बलरामपुर की यात्रा मेरे लिए चीनी सी मीठी याद बनकर रह गई |

**अमरनाथ केसरी**  
**संयुक्त आयुक्त**



## हम तो बेचारी भाषाएँ हैं

ना हिंदी बुरी है ना सिंधी बुरी है  
ना पंजाबी ना तमिल बुरी है  
हम तो बेचारी भाषाएँ हैं  
ना भली हैं ना बुरी हैं  
मन से मन को जोड़ती हैं  
समस्त भावों को पिरोती हैं  
ना मलयालम बुरी है ना मराठी बुरी है  
ना गुजराती, ना उड़िया बुरी है  
बुराई केवल बोलने वालों की नियत में भरी है  
प्रेम से सहलाओ, हम तो फूलों की कली हैं  
ना उर्दू बुरी है ना कोंकणी बुरी है  
ना तेलुगु, ना मैथिली बुरी है  
सुर से सजा दो तो, हर भाषा भली है  
गाली में बसा दो तो, सब बुरी हैं  
ये तो मेरे देश की भरी झोली है  
पग पग पर न्यारी एक बोली है

हम कभी ना भेद करती हैं  
फिर हर पल क्यों पिसती हैं  
मीठे सुरों में घोलो तो भोली हैं  
बंदूक सी फेंको तो गोली हैं  
जो सीख ले उसके लिये सब अच्छी हैं  
नहीं तो चाकू की धार सी नुकीली हैं  
हमने ना पहना कोई चोला  
रंगी उसी रंग में, जो तुमने घोला  
हम तो बेचारी भाषाएँ हैं  
ना भली होती हैं ना बुरी होती हैं  
पर तुम्हारी दी हुई, पीड़ बहुत सहती हैं

\*\*\*\*\*

किरण शर्मा  
निरीक्षक



## लखनवी टुंडे कवाब की कहानी

लखनऊ का टुंडा कवाब पूरे देश भर में प्रचलित है. नॉनवेज के मामले में उतनी किसी और व्यंजन को प्रसिद्धि नहीं मिल पाई है. बता दें कि लखनऊ के सौ साल पुराने टुंडे कबाब की इस दुकान पर दूर दूर से लोग इसका स्वाद चखने पहुंचते हैं. कहा जाता है कि लोग कहीं से भी पता पूछते-पूछते लखनऊ के अकबरी गेट की इस दुकान पर पहुंच जाते हैं.

लखनऊ में टुंडे कवाब की दुकान 1905 में ही खोली गई थी. इस दुकान के मालिक 70 साल के हैं. इनका नाम रईस अहमद है. रईस अहमद का कहना है कि उनके पूर्वज भोपाल के नवाब के यहां खानसामा का काम किया करते थे. क्योंकि नवाब खाने के बेहद शौकीन थे लेकिन उनकी उम्र ज्यादा थी और उनके दांत नहीं थे. जिस कारण से खाने में उनको काफी परेशानी होती थी. ऐसे में कवाब बनाने की बात दिमाग में आई. ये सोचा गया कि क्यों ना एक ऐसा कवाब बनाया जाए जिसके लिए दांत की आवश्यकता ही ना हो. और स्वाद में भी कोई कमी ना हो. इस तरह गोश्त को बारीक पीसकर उसमें पपीता मिलाकर कवाब तैयार किया गया. जो मुंह में लेते ही घुल जाए. इसके स्वाद को बेहतर बनाने के लिए उसने कई और तरह के मसालों का भी इस्तेमाल किया गया. इस तरह से यह परिवार लखनऊ पहुंच गया. अकबरी गेट के पास उन्होंने अपनी दुकान खोल दी.

कहा जाता है कि जब खाने का स्वाद अच्छा हो तो लोग खुद-ब-खुद खिंचे चले आते हैं. इसी तरह इस दुकान की चर्चा भी काफी तेजी से दूर-दूर तक फैल गई. और लोग यहां आकर कबाब का स्वाद लेने लगे. इस तरह इनकी दुकान की चर्चा हुई. और ये दिन-ब-दिन फेमस होते चले गए. बता दें कि टुंडे उसे कहा जाता है जिसके हाथ नहीं होते हैं. और रईस अहमद के पिता पतंग उड़ाने के काफी शौकीन थे. एक बार पतंग के कारण उनका हाथ टूट गया था. ऐसी स्थिति आई कि उनके उस हाथ को काटना पड़ गया. और अब रईस अहमद अपने पिता के साथ दुकान पर बैठने लगे, क्योंकि उनके पिता टुंडे हो गए थे जिस कारण यहां जो भी व्यक्ति कवाब खाने पहुंचते वो टुंडे कबाब बोलने लगे. और इस तरह से टुंडे कवाब का नाम पड़ गया टुंडे कवाब.

इस तरह से पड़ा नाम लखनऊ का टुंडा कवाब - तो दोस्तों है ना टुंडे कबाब की कहानी बेहद रोचक. इससे पहले आपने सोचा भी नहीं होगा कि टुंडे कबाब का नाम इस तरह टुंडा कवाब पड़ा होगा.

रामेन्द्र सिंह  
निरीक्षक, आलुवा मंडल



## विजय परिभाषा

अर्श कर चढान तू, यूँ आज से ये मान तू  
के धरा पे जो यह शोर है, हर चक्षु तेरी ओर है,  
जो काटता है ध्यान को, उस ध्यान पे न ध्यान दो,  
अब गूँज रहा है हर घड़ी, चर्चा तेरा घनघोर है .....

हों लक्ष्य धूमिल कभी, तो अक्ष का परवान दो,  
मद-अग्र को ऊँचा करो, और स्वयं को फिर सम्मान दो...  
यह जान कर के जीवित है तू, इस यथार्थ में निहित है तू ...  
फिर पूछता है क्यों कोई के जीने का तुम प्रमाण दो....

मुर्दों का ही ये काम है, विकृति ही उनकी पहचान है....  
सरलता में जो जिए वोही, वास्तव में जीवंत इंसान है,  
परिस्थितियों से जो मिले वोह महोपदेश है, प्रदान है,  
स्वीकृति पे आश्रित नहीं, यह वोह प्रदेय ज्ञान है.....

दृढ़ता में ऐसा वेग हों के, तेरा निश्चय ही तेरा आवेग हों,  
हर स्वांस से कर प्रण के, तुझे जीने में कभी न खेद हों.....  
अभिभूति कोई भिक्षा नहीं, उस दान को धिक्कार दो,  
यदि वीरता से हों भरी, सम-पराजय को भी सत्कार दो.....

**अशोक कुमार, निरीक्षक,  
आर टी आई /प्रशिक्षण अनुभाग, मुख्यालय**

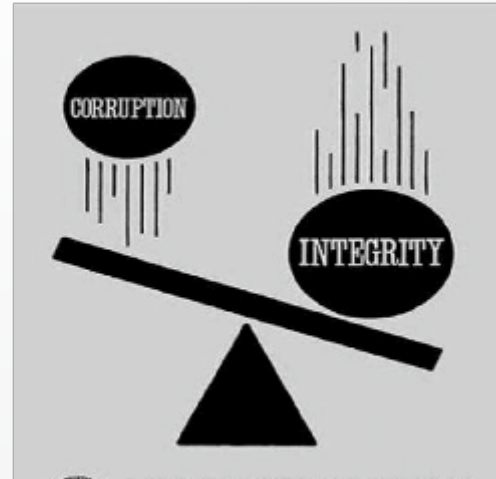


## ईमानदारी को प्रोत्साहन देने एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनसहभागिता

*(Public participation in promoting Integrity and Combating Corruption)*

निःसंदेह, भ्रष्टाचार किसी देश की संवृद्धि को प्रभावित करता है, सरकार की आय को कम करता है, धन के वितरण में असमानता बढ़ाता है, बुनियादी सामाजिक सुविधाओं की लागत को बढ़ाकर उस तक पहुँच को मुश्किल बनाता है, निवेश कम करता है एवं विकास को अवरूद्ध करने तथा गरीबी को कायम रखने में एक बड़ा कारक है। भ्रष्टाचार एक गंभीर अनैतिक आचरण है जो सरकार की वैधता एवं लोक सेवकों में विश्वास और भरोसे को कम करता है। इसलिए हमें आर्थिक विकास को समाज के जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाने के लिए भ्रष्टाचार के प्रति "शून्य सहिष्णुता" (Zero tolerance) को अपनाना होगा अर्थात् कोई सहनशीलता नहीं रखनी होगी।

भ्रष्टाचार से लड़ना केवल कानून बनाकर एवं भ्रष्टाचाररोधी संस्थान का निर्माण कर करना संभव नहीं है क्योंकि यह मानव व्यवहार के मूल्यों एवं नैतिक आचरण में गहराई से जड़ जमाये हुए है। सत्यनिष्ठा/ईमानदारी में मूल्य एवं नैतिकता सर्वोपरि होते हैं। ईमानदारी एवं भ्रष्टाचार सिक्के के दो विपरीत पहलू हैं।



सत्यनिष्ठ व्यक्ति हमेशा सत्य बोलेगा भले ही उसे कुछ नुकसान ही क्यों न उठाना पड़े। किसी व्यक्ति के चरित्र की असली पहचान तब होती है जब कोई उसे

देख नहीं रहा हो। लोग सामान खरीदते समय यदि गलती से कम भुगतान करना पड़े तो तो कुछ नहीं बोलते लेकिन जब ज्यादा भुगतान करना पड़े तो तुरंत मुँह खोलकर विरोध करते हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि “बुराई को मारो बुरे इंसान को नहीं”। भ्रष्टाचार की बुराई को ईमानदारी से आसानी से मिटाया जा सकता है। लेकिन ईमानदारी की भावना बचपन से ही बच्चों में डाली जानी चाहिए बल्कि इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। अभिभावक एवं शिक्षकों को अपने आचरण द्वारा सत्यनिष्ठा/ईमानदारी की मिसाल पेश करनी चाहिए जिससे छात्र उसे अपनायें। किताबी ज्ञान की तुलना में मूल्यों एवं नैतिकता को तरज़ीह दी जानी चाहिए। ईमानदार व्यक्ति को किसी सतर्कता की जरूरत नहीं है, यह तो भ्रष्ट लोगों के लिए है। यह अच्छी बात है कि संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) ने सिविल सेवा परीक्षा के नये पाठ्यक्रम में उम्मीदवारों की ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा की पूर्व जांच करने के उद्देश्य से “नैतिकता एवं ईमानदारी” से संबंधित एक प्रश्न-पत्र डाला है। इतना ही नहीं, ईमानदार व्यक्तियों की ईमानदारी का मजाक उड़ाने या उन्हें बेवकूफ समझने की बजाय उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए। “ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है” यह अकाट्य सत्य है। इसमें किसी प्रकार की कोई संशय नहीं होना चाहिए। भ्रष्ट व्यक्ति कुछ समय के लिए जीवन में आगे जा सकता है, लेकिन अंततः जीत सच की ही होती है। लालच एवं विलासी जीवन जीने की चाहत व्यक्ति को भ्रष्टाचार की ओर अग्रसर करती है। अतः समाज में इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिए एवं सादगीपूर्ण जीवन जीने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री सादगी की एक अच्छी मिसाल हैं।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध जंग तब तक नहीं जीती जा सकती जब तक कि जनता का समर्थन एवं भागीदारी न हो। जनता को भ्रष्टाचार के विरुद्ध भागीदार बनने के लिए प्रण लेना होगा कि :

- जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी एवं कानून के नियमों का पालन करेगा
- ना तो रिश्वत लेगा और न ही देगा
- भ्रष्टाचार की किसी भी घटना को देखकर आँख मूंदने के बजाय उसकी सूचना उचित एजेन्सी को देगा
- अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर उदाहरण प्रस्तुत करेगा
- सभी कार्य ईमानदारी एवं पारदर्शी रीति से करेगा
- जनहित में कार्य करेगा

जिस धन को सरकार से छुपा के रखा जाये अर्थात जिस धन पर टैक्स नहीं दिया जाय उसे 'काला धन' (Black Money) कहते हैं। धन अपने आप में काला नहीं होता यदि किसी गरीब से गरीब व्यक्ति की गाड़ी कमाई का सफेद धन (White Money) नकद/कैश में भुगतान किया जाता है और उसे प्राप्त करने वाला व्यवसायी (Businessman) उस धन पर टैक्स भुगतान नहीं करता है तो वह उसका 'काला धन' बन जाता है। इसलिए जहां तक हो सके डिजिटल पेमेंट करें एवं काला धन बनने की प्रक्रिया को ही रोकने में सहयोग कर भ्रष्टाचार मिटाने में योगदान दें।

भ्रष्टाचार केवल सरकारी विभागों से संबंधित समस्या नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज में व्याप्त है। सरकारी कर्मचारी भी समाज के ही अंग हैं एवं सरकारी विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार तो केवल समाज का आईना है। गलत नहीं कहा गया है " सौ में नब्बे बेईमान, फिर भी मेरा देश महान " । आज के समय में अधिकांश लोग सिर्फ इसलिए ईमानदार हैं क्योंकि उन्हें भ्रष्ट होने का मौका ही नहीं मिला। आम आदमी स्वयं ही अनैतिक एवं भ्रष्ट है एवं अपना काम जल्द से जल्द, दूसरों से पहले कराने के लिए पैसे देने को तैयार है, इससे भ्रष्टाचार पनपता है।



**सूचना का अधिकार** (Right to Information Act) भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने के लिए एक सशक्त हथियार हैं। हमें इसका प्रयोग भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए करना चाहिए भले ही वह प्रत्यक्ष रूप से हमसे संबंधित न हो। भ्रष्टाचार के बहुत सारे मामले आरटीआई कार्यकर्ताओं द्वारा उजागर किये गये हैं। भ्रष्टाचार उजागर करने वालों की सुरक्षा के लिए **मुखबिर संरक्षण कानून** (Whistle Blowers Protection Act) भी बना दिया गया है जिससे अब उन्हें डरने की जरूरत भी नहीं है। CPGRAMS पर भी भ्रष्टाचार की शिकायत ऑनलाइन की जा सकती है एवं इस पर कार्यवाई अवश्य होती है। जनता को प्रशासन के आँख और कान की तरह बनकर रहना चाहिए। अल्बर्ट आइंस्टीन ने ठीक ही कहा है- *“ विश्व रहने के लिए एक खतरनाक जगह है इसलिए नहीं कि यहाँ बुरे लोग रहते हैं, बल्कि इसलिए कि वो इसके लिए कुछ नहीं करते हैं।”*

भ्रष्टाचार को समाज से पूरी तरह मिटाने के लिए जनता को इसमें भागीदार बनना होगा एवं एकजुट होकर इसका विरोध करना होगा। याद कीजिए वो समय जब **श्री अन्ना हजारे** के नेतृत्व में *“India Against Corruption”* के बैनर तले पूरा देश भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़ा हो गया था और आखिरकार सरकार को भ्रष्टाचार विरोधी कानून **लोकपाल बिल** लाने के लिए मजबूर होना पड़ा। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि सूचना का अधिकार कानून भी श्रीमति अरुणा राय, श्री अरविंद केजरीवाल जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं के वर्षों के आंदोलन का ही नतीजा था। इसी तरह की भावना जनता को हमेशा दिखाते रहना होगा, लेकिन कानून को अपने हाथ में लेकर नहीं। सोशल मीडिया एवं गैर-सरकारी संगठन (NGOs) भी इस संबंध में जागरूकता फैलाने में खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

**“ सतर्कता जागरूकता सप्ताह ” (Vigilance Awareness Week)** एक प्रयास है समाज एवं प्रशासन को भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूक करने की। लेकिन यह केवल एक सप्ताह का कर्मकाण्ड (rituals)/औपचारिकता (formality) भर नहीं होनी चाहिए बल्कि यह जनता के दिलों में हर क्षण, हर दिन चलती रहनी चाहिए। भ्रष्टाचार विरोधी कड़े कानून, भ्रष्टाचार रोधक एजेंसी (Anti-corruption Agencies), तकनीक (Technology) आदि भ्रष्टाचार कम करने के केवल साधन (tools) हैं, रामबाण (panacea) नहीं हैं। जागरूक, सतर्क, भागीदार एवं सशक्त जनता ही भ्रष्टाचार को जड़ से मिटा सकती है।

**“ भ्रष्टाचार है एक रोग,**

**जिसे सतर्कता से मिटायेंगे हम लोग। ”**

- मनोज कुमार  
सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक)



## न्याय और संघर्ष

घूमता है क्षुब्ध जो  
धूल के गुबार में,  
लड़खड़ाती चाल जैसे  
लौ जली मशाल में;  
हाथ जिसके हैं जुड़े  
न्याय की गुहार में,  
सांस साधे है खड़ा  
उम्मीद की कतार में;  
बूंद बूंद सूख चुकी  
चक्षुओं के बांध में,  
देखता निरीह जीव  
धूप आसमान में।  
सोचता शरण मिले  
या कि छाँव प्यार की,  
गर्म वात हो शिथिल,  
मिले घटा बहार की ।  
पूछता है प्रश्न क्यूँ  
कोई नहीं है जानता  
सहिष्णुता का धैर्य गीत  
मन नहीं क्यूँ मानता?  
पूर्वजों की सीख वो  
कि शांति की जला चिता  
रोशनी से तृप्त कर  
तम से पटी धरा।  
क्या जानता नहीं मनुज  
मृत्युलोक है यही ?  
दुःख का यहां से वास्ता  
और मृत्यु ही मंज़िल सही ?  
साँस का नहीं जो अंत

रोके क्यों वो टीस तुझे ?  
कर श्रम सघन हालत बदल  
मन की ज्वाला न बुझे ।  
क्रोध,कर्म,कमान बिन  
ना क्रांति कोई फूटती,  
ना बिन लहु या घाव के  
अशांति कोई टूटती।  
जब हाथ में लिए खड़ग  
काल लेता सिसकियाँ,  
और, सूखते अधर  
से आह कोई छूटती :  
तब हाथ धर ज़मीन पर  
खींच साँस, धूल की  
मस्तकों पर कर तिलक  
जिजीविषा के मूल की ।  
शस्त्र धर चल फिर अडिग  
अपने दुखड़े तू रो चुका  
त्रास अपना छोड़के,  
न्याय की उठा ध्वजा॥

निशांत ठाकुर

- निरीक्षक ( अपील ), कोचिन



## 1. उलझनों और कश्मकश में,

उम्मीद की ढाल लिए बैठा हूँ।

ए जिन्दगी! तेरी हर चाल के लिए

मैं दो चाल लिए बैठा हूँ।

लुत्फ उठा रहा हूँ मैं भी आँख-मिचोली का

मिलेगी कामयाबी, हौसला कमाल का लिए बैठा हूँ।

चल मान लिया, दो-चार दिन नहीं मेरे मुताबिक.....

गिरेबान में अपने, ये सुनहरा साल लिए बैठा हूँ।

ये गहराइयाँ, ये लहरें, ये तूफां, तुम्हें मुबारक.....

मुझे क्या फिक्र, मैं कश्तियाँ और दोस्त.....बेमिसाल लिए बैठा हूँ.....

## 2. हमनें दुःख के महासिन्धु से सुख का मोती बीना है,

और उदासी के पंजों से हँसने का सुख छीना है,

मान और सम्मान हमें ये याद दिलाते हैं, पल-पल,

भीतर-भीतर मरना है पर बाहर बाहर जीना है.....

पूनम राठौड़  
आशुलिपिक



## देश के प्रति मेरा कर्तव्य

(My duties to the nation)

“ मुझे तोड़ लेना वनमाली  
उस पथ पर देना तुम फेंक  
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने  
जिस पथ पर जायें वीर अनेक ”

ये पंक्तियाँ माखनलाल चतुर्वेदी की “पुष्प की अभिलाषा” शीर्षक कविता से ली गई हैं जो कि किसी भी सच्चे देशप्रेमी भारतीय के दिल की अभिलाषा हो सकती हैं, लेकिन क्या केवल सीमा पर जान देना या “भारत माता की जय” का नारा लगाना ही देशभक्ति है या देशभक्ति के कुछ और भी मायने हैं या यों कहें कि देश के प्रति हमारे कुछ और भी कर्तव्य हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है।

कर्तव्य किसी भी व्यक्ति के लिए नैतिक या वैधानिक जिम्मेदारी है जिनका पालन सभी को अपने देश के लिए करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति कर्तव्य का पालन करना राष्ट्र के प्रति हमारे सम्मान को दर्शाता है।

संविधान के भाग 3 में अनुच्छेद 51क के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा कि वह:

1. संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करें।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें।

3. भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें।
4. देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।
6. हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझें और उसका परिरक्षण करें।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत, वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखें।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानववाद और जानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।
10. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाईयों को छू ले।
11. 6 से 14 वर्ष तक की उम्र के बीच अपने बच्चों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना।

संविधान में बताये गये इन वैधानिक कर्तव्यों के अलावा भी हर व्यक्ति के कुछ और भी नैतिक कर्तव्य हैं। "कर्म ही पूजा है" को अमलीजामा पहनाते हुए हम चाहें सरकारी सेवक हों, विद्यार्थी हों, किसान हों, मजदूर हों या बड़े व्यवसायी हों, अपना काम ईमानदारी से करना चाहिए। जब भी हमें हमारे काम के दौरान कुछ संशय लगे तो गांधीजी का जंतर हमें याद रखना चाहिए जिसमें उन्होंने कहा है- "जब भी तुम्हें सन्देह हों या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी

आजमाओ : जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा ? क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा यानि क्या उससे करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखें हैं और आत्मा अतृप्त है? तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।"

हमें भाग्यवादी नहीं, बल्कि कर्मवादी होना चाहिए। क्योंकि भाग्यवाद अकर्मण्यता को बढ़ावा देता है। मनुष्य का भाग्य उसके हाथ की रेखाओं में नहीं, बल्कि उसकी मुट्ठी में होता है। वह अपने कर्म से अपना और अपने देश का भाग्य बदल सकता है। पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुरशास्त्री, पूर्व राष्ट्रपति श्री ए पी जे अब्दुल कलाम, वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इत्यादि कई उदाहरण हमारे सामने उपलब्ध हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने क्या खूब लिखा है-

*"भाग्यवाद आवरण पाप का  
और शस्त्र शोषण का  
जिससे रखता दबा एक जन  
भाग दूसरे जन का "*

अपने सामर्थ्य और बुद्धि के आधार पर दूसरों के जीवन को प्रकाशमय बनाना मनुष्य का धर्म है। केवल अपने बारे में सोचना और जीना पशु का लक्षण है। मनुष्य को चाहिए कि वह दूसरों के काम आये और धरती पर फैले अंधकार को मिटा दे। रामधारी सिंह 'दिनकर' के शब्दों में-

*“दीपक का निर्वाण बड़ा कुछ  
श्रेय नहीं जीवन का  
है सद्वर्म दीप्त रख उसको  
हरना तिमिर भुवन को”*

भाषा व्यक्ति को जोड़ती है, व्यक्ति को जोड़ने से परिवार बनता है, परिवार को जोड़ने से समाज, समाज से गाँव, गाँव से शहर, शहर से महानगर एवं महानगर से देश एवं देश के विकास में जुड़ाव का होना बहुत आवश्यक है। खासतौर से यह जुड़ाव हिंदी भाषा के माध्यम से ही हो सकता है क्योंकि यह देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है जब तक इसका विकास नहीं होगा देश के अखंडता में बाधक रहेगा। लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भारत बहु भाषाभाषी देश है। हमें हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए क्योंकि कोई भी भाषा वहाँ की संस्कृति से जुड़ी होती है एवं भाषा के नाम पर किसी भी प्रकार की कलह पैदा नहीं होनी चाहिए। हिन्दी समन्वय की भाषा है और इसका किसी भी भाषा से कोई विरोध नहीं है। यह बात सही है कि अंग्रेजी आज की ज़रूरत है लेकिन क्या ज़रूरत के लिए नींव को छोड़ा जा सकता है। अगर हिन्दी को इस तरह से पृथक कर दिया जायेगा तो गाँव एवं शहरों में बढ़ता मतभेद और गहरा होता जायेगा।

*“ अच्छा है बहुभाषा का ज्ञान, इससे बनते हैं सब महान ।  
सीखो जी भर के भाषा अनेक, पर राष्ट्रभाषा न भूलो एक ॥”*

हमारी संस्कृति में “अतिथि देवो भवः” की बात कही गई है। हमें इसका पालन करते हुए जब भी कोई विदेशी या दूसरे राज्य का व्यक्ति हमारे देश/राज्य में आता है तो हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जिससे कि हमारे देश/राज्य



की छवि खराब हो। ज्ञातव्य हो कि पर्यटन का किसी भी देश/राज्य की अर्थव्यवस्था के विकास में महती भूमिका होती है।

हर काम सरकार के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती। जब तक जनता की भागीदारी नहीं होगी तबतक सरकार की कोई योजना पूरी तरह से सफल नहीं हो सकती है। हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने कार्यालयों में, घर में या कहीं भी बिजली की बर्बादी न करें और ना करने दें क्योंकि बिजली बचाना बिजली उत्पादन करने के बराबर है (*saving electricity is equal to producing electricity*)। यथासंभव सार्वजनिक वाहन का प्रयोग करें या यदि संभव न हो तो गाड़ी साझा (pool) करें क्योंकि व्यक्तिगत वाहनों के उपयोग से प्रदूषण, सड़क जाम, दुर्घटनायें इत्यादि होती हैं। हमें आसपास गंदगी ना फैलाकर स्वच्छ भारत बनाने में सरकार का सहयोग करना चाहिए एवं ये कभी नहीं सोचना चाहिए कि सफाई करना सरकार का काम है। हमें पुलिस और प्रशासन की आँख और कान बन कर रहना चाहिए एवं किसी भी अप्रत्याशित घटना की जानकारी तुरंत पुलिस को देनी चाहिए। भूल से भी कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए एवं कानून का काम कानून को करने देना चाहिए तथा अराजकता (anarchy) न फैलाकर विधि-व्यवस्था (law and order) बनाये रखने में सरकार का सहयोग करते रहना चाहिए।



हर व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि से अगाध प्रेम करे और इसके लिए अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार रहे। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के शब्दों में-

“आहुति बाकी यज्ञ अधूरा,  
अपनों के विघ्नों ने घेरा,  
अंतिम जय का वज्र बनाने,  
नव दधीचि हड्डियां गलायें  
आओं फिर से दिया जलायें  
एक नया स्वच्छ भारत बनायें।”

पुनः अटल जी के ही शब्दों में-

“भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।

-----  
यह वन्दन की भूमि है, यह अभिनन्दन की भूमि है  
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है  
इसका कंकर-कंकर शंकर है, इसका बिंदु-बिंदु गंगाजल है  
हम जियेंगे तो इसके लिये, मरेंगे तो इसके लिए।”

--जय हिंद--

- मनोज कुमार  
सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक)



## आँगन चोरी हो गया

रपट लिखवानी है, साहब  
आँगन चोरी हो गया  
था तो वो घर का हिस्सा  
पर कहता था सबकी जिंदगी का किस्सा  
साहब वो आँगन चोरी हो गया  
बच्चों का क्रिकेट फुटबाल का मैदान था  
छुटकी वहाँ गुड़ियों का ब्याह रचाती थी  
माँ वहाँ बैठकर धागों और सलाइयों में प्रेम को पिरोती थी  
दादी के रामायण पाठ का स्थान था  
दादा की बैठक का दालान था  
सर्दियों में मूँगफली और धूप का मज़ा था वहाँ  
बरसात में भीगने का चलन था वहाँ  
गेहूँ, मिर्चे, पापड़, अचार, बडियां  
सुखाए जाते थे  
पँछी जहाँ बेखौफ आते जाते थे  
माँ, चाची, बुआ और ताई के  
मनोरंजन का एक ही आधार था  
जहाँ लड़ने, हँसने, गाने और  
सीखने सिखाने का बेखौफ प्रावधान था  
जहाँ अतिथि बिना तिथि देखे आते थे  
तीज त्योहारों पर मेलों लगते थे  
प्यार की रंगोली सजती थी

शादी ब्याह में रौनक होती थी  
वो आँगन आज चोरी हो गया  
क्या निशानी बताऊँ उसकी  
बीचों बीच एक तुलसी का पौधा था  
कोने में मिट्टी का सांझा एक चौका था  
जिसमें संध्या दीपक जलता था  
  
वो आँगन चोरी हो गया साहब  
कितने फूलों की बेलें थी  
गड़िया को रखने की व्यवस्था थी  
पंछी बेधड़क चुगगा चुगते थे  
प्यासे बिल्ली, कुत्ते पानी पीते थे  
आचार व्यवहार की पहली पाठशाला था  
साहब वो आँगन आज चोरी हो गया

\*\*\*\*\*

किरण शर्मा  
निरीक्षक



## ऐसी होती है माँ

हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ....

कभी डाँटती है हमें, तो कभी गले लगा लेती है माँ.....

हमारी आँखों के आंसू, अपनी आँखों में समा लेती है माँ.....

अपने होठों की हँसी, हम पर लुटा देती है माँ.....

हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ....

जब भी कभी ठोकर लगे, तो हमें तुरंत याद आती है माँ.....

दुनिया की तपिश में, हमें आँचल की शीतल छाया देती है माँ.....

खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ....

प्यार भरे हाथों से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ.....

बात जब भी हो लजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ.....

रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ.....

लब्जों में जिसे बयाँ नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ.....

भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं ऐसी होती है माँ

नितेश

निरीक्षक



## 1. अँधेरे कमरे में रोज चिराग जला कर

अक्सर बुझते से रिश्ते को तापती हूँ मैं  
कदम उठते नहीं जमीं इन्हें थाम लेती है  
तब चश्में तर रो फलक को ताकती हूँ मैं  
मैं थकती नहीं सफर की मुश्किलों से पर  
रहगुजर है मुकाम नहीं यह जानती हूँ मैं  
अपने ख्याबों की हिफाजत खुद कर के  
जेहन में दिनरात फिर इन्हें पालती हूँ मैं  
जो हासिल मुझे वो भी तो कहाँ मेरा है  
पर भीड़ में उसे ही अपना मानती हूँ मैं  
जो थे पंसद पर तय न हो सके मुझसे  
उन्हीं रास्तों को अब भी नापती हूँ मैं ।

## 2. दर्द कागज पर,

मेरा बिकता रहा  
मैं बैचेन था,  
रातभर लिखता रहा..  
छू रहे थे सब,  
बुलंदियाँ आसमान की,  
मैं सितारों के बीच  
चाँद की तरह छिपता रहा..  
अकड़ होती तो  
कब का टूट गया होता,  
मैं था नाजुक डाली,

जो सबके आगे झुकता रहा..  
बदले यहाँ लोगों ने,  
रंग अपने-अपने ढंग से,  
रंग मेरा बिखरा पर,  
मैं मेहँदी की तरह पिसता रहा..  
जिनको जल्दी थी  
वो बढ़ चले मंजिल की ओर,  
मैं समन्दर से राज,  
गहराई से सीखता रहा..!!

महिमा दीक्षित  
आशुलिपिक



## प्रेरणा श्रोत

जो मुझे है ढके हुए उस रात के बाहर  
एक अंधकूप जो सीमान्त है इस छोर से उस छोर .....

वह जो कोई हो, उस इश्वर का शुकुरिया  
मेरे अंदर एक अजीत रूह कायम तो हुआ .....

उन हालातों के जकड़न में मैं घिरा तो मगर  
एक उफ़ न निकली नहीं शिकन थी मेरे चेहरे पर.....

जोखिम भरे रास्तों ने मुझे रोका तोह बहुत  
मेरे पैर तो ज़खमी थे पर मेरा सर तो उठा हुआ ...

इस गुस्से और आंसू के मंज़र से दूर  
वह काली छाया में घिरी उदासी की छवि .....

और इन गुज़ारे सदियों ने डराया भी बहुत  
वक़्त ने जब भी मुझे पाया तो निर्भीक खड़ा हुआ .....

इससे फर्क पड़ता है क्या रास्ता कितना भी तंग हो  
यह भी मुमकिन सही फरमान -ऐ - हाकिम से जंग हो

किस्मत की मलिक्यत तोह हमें पैदाईशी है मिली हुई  
खुद के नायक हैं हम यह सोच थी कहीं दबी हुई .....

अशोक कुमार, निरीक्षक,  
आर टी आई /प्रशिक्षण अनुभाग, मुख्यालय

## हिंदी की संवैधानिक स्थिति

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को देश के राज-काज चलाने के साथ-साथ केंद्र व राज्यों के बीच संपर्क बनाए रखने की भूमिका निभाने का दायित्व हिन्दी को सौंपकर उसे संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। इसलिए हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संविधान के 17वें भाग में राजभाषा संबंधी उपबंध दिए गए हैं जिनमें अनुच्छेद 343 से 351 तक 9 अनुच्छेद राजभाषा से संबंधित हैं जिनके अध्ययन से राजभाषा की संवैधानिक स्थिति स्पष्ट होती है। संविधान में राजभाषा संबंधी उपबंध :-

**अनुच्छेद-343(1) :** हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत करना :

संविधान के इस अनुच्छेद के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी संघ की राजभाषा होगी तथा संघ में सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप प्रयोग होगा।

**अनुच्छेद-343(2) :** हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखना :

अनुच्छेद 343(2) के अनुसार संविधान लागू होने से 15 वर्ष तक यानी 26 जनवरी, 1965 तक हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग भी होता रहेगा।

**अनुच्छेद-343(3) :** अनुच्छेद 343(3) के अनुसार संसद को यह अधिकार दिया गया कि यदि संसद चाहे तो अनुच्छेद 343(2) में दी गई 15 वर्ष की अवधि को आगे बढ़ा सकती है।

**अनुच्छेद-344 (1) :** राजभाषा आयोग तथा संसदीय राजभाषा समिति का गठन :

इस अनुच्छेद में यह व्यवस्था की गई कि संविधान के लागू होने के 5 साल बाद अर्थात् 1955 में एक राजभाषा आयोग का गठन किया जाएगा जो राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए उपाय करेगा।

**अनुच्छेद-344 (2) :** अनुच्छेद 344(2) के अनुसार अनुच्छेद 344(1) के तहत गठित राजभाषा आयोग अन्य बातों के साथ-साथ सरकारी काम-काज में हिन्दी के क्रमिक प्रयोग करने के बारे में राष्ट्रपति को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगा।

**अनुच्छेद-348 खण्ड - (3) :** अनुच्छेद-348 के खण्ड (3) के अनुसार यदि किसी राज्य में विधि के लिए अंग्रेजी को छोड़कर कोई दूसरी भाषा नियत की गई है तो राज्यपाल के प्राधिकार से राज्य के गज़ट में प्रकाशित विधियों, नियमों, आदि का अंग्रेजी अनुवाद उनका प्राधिकृत पाठ होगा।



**अनुच्छेद-349:**भाषा संबंधी कुछ विधियों को अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया :-

अनुच्छेद 349 में यह कहा गया है कि 348(1) में उल्लिखित भाषा की व्यवस्था में परिवर्तन के लिए यदि 1965 के पहले कानून बनाया जाता है तो उस के लिए राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त करनी अनिवार्य होगी । राष्ट्रपति अनुच्छेद 344 के अधीन गठित आयोग और समिति की रिपोर्टों पर विचार करने के बाद ही अपनी अनुमति दे सकते थे । तदनुसार राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ही राजभाषा अधिनियम 1963 (जिसमें 348वें अनुच्छेद में की गई कानूनी व्यवस्था में कुछ परिवर्तन सुझाया गया था )को संसद में पेश किया गया था ।

**अनुच्छेद-350:** आवेदन /अभ्यावेदन की भाषा :-

अनुच्छेद -350 के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि वह अपनी व्यथा के निवारण के संबंध में अपना आवेदन /अभ्यावेदन सरकारी पदाधिकारी के सामने किसी भी भाषा में प्रस्तुत कर सकता है । यह शर्त ज़रूर है कि अगर आवेदन संघ के पदाधिकारी को लिखा गया है तो संघ में प्रयुक्त भाषा में होना चाहिए और अगर वह किसी राज्य के अधिकारी को संबोधित है तो उस राज्य में प्रयुक्त भाषा में होना चाहिए । अनुच्छेद 350(क) तथा 350(ख) के द्वारा भाषायी अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए यह व्यवस्था की गई है ।

**अनुच्छेद-351:** हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश :-

351वें अनुच्छेद में हिन्दी के विकास के विषय में उल्लिखित किया गया है कि भाषा की आत्मीयता में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं की रूप-शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत तथा गौणतः उल्लेखित भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ सरकार का कर्तव्य होगा ।

संविधान बनाने वालों की यह दिली इच्छा थी कि हिन्दी भारत में इस प्रकार विकसित हो कि सब उसे मान्यता दें । सभी प्रांतों के लोग इसे अपना कर इसमें सरकारी कामकाज करें । हिन्दी के संघीय और प्रादेशिक दोनों रूपों का उल्लेख किया गया है ।

\*\*\*\*\*

*राजभाषा हिन्दी अनुभाग*



## जून का महीना और बरसात

हर साल भारत में मानसून अंडमान द्वीप समूह में पहले और उसके तुरंत बाद केरल में आ जाती है ।

मेरा बचपन केरल के एक सुन्दर शहर में गुजरा है । सुन्दर इसलिए कि शहर के बीचों बीच एक नदी बहती है । बचपन की सबसे सुहानी याद अप्रैल -मई महीनों की गर्मी की छुट्टियां हैं और उसके बाद बादलों के साथ आने वाली जून -जुलाई की बरसात । आम के पेड़ सभी घरों में होते थे जो गर्मियों में फूलते और फलते थे । हवा का एक झोंका ही काफी था आम गिरते थे और बच्चे घरों से बाहर की ओर दौड़ते थे, चाहे बारिश हो न हो, कोई फरक नहीं पड़ता था । कितने खुशगवार थे वे दिन ।

केरल की सबसे लम्बी नदी है पेरियार और वह हमारे शहर से भी बहती है । मेरा घर भी उसके एकदम पास ही था । जून की पहली तारीख को केरल में स्कूल शुरू हो जाता है । बच्चे अपने स्कूल यूनिफार्म (वर्दी) पहनकर नए बैग में नई पुस्तकें लेकर स्कूल जाने की तैयारी में रहते हैं । लेकिन वर्षा देवी को यह सब बिलकुल पसंद नहीं है, मुझे ऐसा ही लगता था । जून की पहली तारीख को वर्षा बड़ी जोर से होती थी । सभी नई चीज़ें खराब करने के लिए ।

बारिश के दिनों में अचानक छुट्टियां मिलती थी, जिला कलेक्टर के बदौलत । जब कई दिनों, हफ्तों के लिए लगातार बारिश होती थी तब । इसीलिये सुबह सुबह अखबार पढ़ने में हम बच्चों के लिए बहुत मज़ा आता था, कहीं कलेक्टर साहब छुट्टी की घोषणा तो नहीं की है, यह देखना रहता था ।

दसवीं कक्षा में जब हम पहुंचे तो सभी बच्चे गणित के लिए अलग से ट्यूशन ले रहे थे । मैंने भी लिया । सुबह बहुत जल्दी उठना पड़ता था । और बारिश में नदी के किनारे की अंधेरी पतली गलियों से धीरे धीरे जाते थे हम । क्योंकि बारिश के दिनों में सूरज जी तो आते ही नहीं थे और हमें तो स्कूल खुलने से पहले ट्यूशन खतम करना भी होता था ।

इतनी परेशानियों के बावजूद भी मज़ा बहुत आता था । एक घर के आँगन में आम का बहुत बड़ा पेड़ था, जिसकी शाखाएं गली तक होती थी और उसमें बहुत बड़े और स्वादिष्ट आम होते थे । रात की बारिश में बहुत सारे बड़े बड़े आम गली में भी गिरते थे । लेकिन सुबह उन्हें उठाने की हिम्मत ही नहीं होती थी हमें । मैं आज भी सोचती हूँ कि काश थोड़ी बहुत हिम्मत होती मुझमें । काश मैं वह आम उठाती और खा पाती । खैर, वह ज़माना अब नहीं रहा । अभी भी वह आम का पेड़ वहां पर है । जब भी माइके जाती हूँ तो मैं ज़रूर उसे देखती हूँ और सोचती हूँ ..काश ..

जून महीने में आज भी बारिश होती है । हम फ्लैट से बारिश देखते हैं, भीगते नहीं हैं और महसूस भी नहीं करते । मैं सोचती हूँ कहाँ गए वे मंदक जिन की आवाज़ सुनाकर हम बच्चों को डराते थे ।

रोसेलिंड जोस कोरुतु  
कनिष्ठ अनुवादक

## यूनिकोड, एक अद्भुत बात

**यूनिकोड** (Unicode), प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष संख्या प्रदान करता है, चाहे कोई भी कम्प्यूटर प्लेटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा कोई भी भाषा हो। यूनिकोड स्टैंडर्ड को एपल. एच.पी., आई.बी.एम., जस्ट सिस्टम, माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, साईबेस, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनिकोड की आवश्यकता आधुनिक मानदंडों, जैसे एक्स.एम.एल, जावा, एकमा स्क्रिप्ट (जावास्क्रिप्ट), एल.डी.ए.पी., कोर्बा 3.0, डब्ल्यू.एम.एल के लिए होती है और यह आई.एस.ओ/आई.ई.सी. 10646 को लागू करने का अधिकारिक तरीका है। यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों और कई अन्य उत्पादों में होता है। यूनिकोड स्टैंडर्ड की उत्पत्ति और इसके सहायक उपकरणों की उपलब्धता, हाल ही के अति महत्वपूर्ण विश्वव्यापी सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी रुझानों में से हैं।

यूनिकोड को ग्राहक-सर्वर अथवा बहु-आयामी उपकरणों और वेबसाइटों में शामिल करने से, परंपरागत उपकरणों के प्रयोग की अपेक्षा खर्च में अत्यधिक बचत होती है। यूनिकोड से एक ऐसा अकेला सॉफ्टवेयर उत्पाद अथवा अकेला वेबसाइट मिल जाता है, जिसे री-इंजीनियरिंग के बिना विभिन्न प्लेटफॉर्मों, भाषाओं और देशों में उपयोग किया जा सकता है। इससे ऑकड़ों को बिना किसी बाधा के विभिन्न प्रणालियों से होकर ले जाया जा सकता है।

### यूनिकोड क्या है?

यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नम्बर प्रदान करता है,

- चाहे कोई भी प्लेटफॉर्म हो,
- चाहे कोई भी प्रोग्राम हो,
- चाहे कोई भी भाषा हो।

कम्प्यूटर, मूल रूप से नंबरों से सम्बंध रखते हैं। ये प्रत्येक अक्षर और वर्ण के लिए एक नंबर निर्धारित करके अक्षर और वर्ण संग्रहित करते हैं। यूनिकोड का आविष्कार होने से पहले, ऐसे नंबर देने के लिए सैंकड़ों विभिन्न संकेत लिपि प्रणालियां थीं। किसी एक संकेत लिपि में पर्याप्त अक्षर नहीं हो सकते हैं : उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ को अकेले ही, अपनी सभी भाषाओं को कवर करने के लिए अनेक विभिन्न संकेत लिपियों की आवश्यकता होती है। अंग्रेजी जैसी भाषा के लिए भी, सभी अक्षरों, विरामचिह्नों और सामान्य प्रयोग के तकनीकी प्रतीकों हेतु एक ही संकेत लिपि पर्याप्त नहीं थी।

ये संकेत लिपि प्रणालियाँ परस्पर विरोधी भी हैं। इसीलिए, दो संकेत लिपियाँ दो विभिन्न अक्षरों के लिए, एक ही नंबर प्रयोग कर सकती हैं, अथवा समान अक्षर के लिए विभिन्न नम्बरों का प्रयोग कर सकती हैं। किसी भी कम्प्यूटर (विशेष रूप से सर्वर) को विभिन्न संकेत लिपियाँ संभालनी पड़ती हैं; फिर भी जब दो विभिन्न संकेत लिपियाँ अथवा प्लेटफॉर्मों के बीच डाटा भेजा जाता है तो उस डाटा के हमेशा खराब होने का जोखिम रहता है।

**यूनिकोड से यह सब कुछ बदल रहा है!**

यूनिकोड की विशेषताएँ

- १) यह विश्व की सभी लिपियों से सभी संकेतों के लिए एक अलग कोड बिन्दु प्रदान करता है।
- २) यह वर्णों (कैरेक्टर्स) को एक कोड देता है, न कि ग्लिफ (glyph) को।
- ३) जहाँ भी सम्भव यूनिकोड होता है, यह भाषाओं का एकीकरण करने का प्रयत्न करता है। इसी नीति के तहत सभी पश्चिम यूरोपीय भाषाओं को कोलैटिन के अन्तर्गत समाहित किया गया है; सभी स्लाविक भाषाओं को सिरिलिक (Cyrilic) के अन्तर्गत रखा गया है; हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली, सिन्धी, कश्मीरी आदि के लिए 'देवनागरी' नाम से एक ही ब्लॉक दिया गया है; चीनी, जापानी, कोरियाई, वियतनामी भाषाओं को 'युनिहान्' (UniHan) नाम से एक ब्लॉक में रखा गया है; अरबी, फारसी, उर्दू आदि को एक ही ब्लॉक में रखा गया है।
- ४) बाएँ से दाएँ लिखी जाने वाली लिपियों के अतिरिक्त दाएँ-से-बाएँ लिखी जाने वाली लिपियों (अरबी, हिब्रू आदि) को भी इसमें शामिल किया गया है। उपर से नीचे की तरफ लिखी जाने वाली लिपियों का अभी अध्ययन किया जा रहा है।
- ५) यह ध्यान रखना जरूरी है कि यूनिकोड केवल एक कोड-सारणी है। इन लिपियों को लिखने/पढ़ने के लिए इनपुट मेथड एडिटर और फॉण्ट-फाइलें जरूरी हैं।
- ५) यूनिकोड १६ बिट्स को एक ईकाई के रूप में लेकर चलता है।

यूनिकोड का महत्व और लाभ

- एक ही दस्तावेज में अनेकों भाषाओं के टेक्स्ट लिखे जा सकते हैं।
- टेक्स्ट को केवल एक निश्चित तरीके से संस्कारित करने की जरूरत पड़ती है जिससे विकास-खर्च एवं अन्य खर्चे कम लगते हैं।

- किसी सॉफ्टवेयर-उत्पाद का एक ही संस्करण पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय बाजारों के लिए अलग से संस्करण निकालने की जरूरत नहीं पड़ती
- किसी भी भाषा का टेक्स्ट पूरे संसार में बिना भ्रष्ट हुए चल जाता है। पहले इस तरह की बहुत समस्याएं आती थीं।

### हानियाँ

यूनिकोड, आस्की तथा अन्य कैरेक्टर कोडों की अपेक्षा अधिक स्मृति (मेमोरी) लेता है। कितनी अधिक स्मृति लगेगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कौन सा यूनिकोड प्रयोग कर रहे हैं। UTF7, UTF8, UTF16 या वास्तविक यूनिकोड - एक अक्षर अलग-अलग बाइट प्रयोग करते हैं।

### देवनागरी यूनिकोड

- देवनागरी यूनिकोड की परास (रेंज) 0900 से 097F तक है। (दोनों संख्याएं षोडषाधारी हैं)
- क्ष, व्र एवं ज के लिये अलग से कोड नहीं हैं। इन्हें संयुक्त वर्ण मानकर अन्य संयुक्त वर्णों की भांति इनका अलग से कोड नहीं दिया गया है।
- इस रेंज में बहुत से ऐसे वर्णों के लिये भी कोड दिये गये हैं जो सामान्यतः हिन्दी में व्यवहृत नहीं होते। किन्तु मराठी, सिन्धी, मलयालम आदि को देवनागरी में सम्यक ढंग से लिखने के लिये आवश्यक हैं।
- नुक्ता वाले वर्णों (जैसे ज़) के लिये यूनिकोड निर्धारित किया गया है। इसके अलावा नुक्ता के लिये भी अलग से एक यूनिकोड दे दिया गया है। अतः नुक्तायुक्त अक्षर यूनिकोड की दृष्टि से दो प्रकार से लिखे जा सकते हैं - एक बाइट यूनिकोड के रूप में या दो बाइट यूनिकोड के रूप में। उदाहरण के लिये ज़ को 'ज ' के बाद नुक्ता (◌) टाइप करके भी लिखा जा सकता है।

\*\*\*\*\*

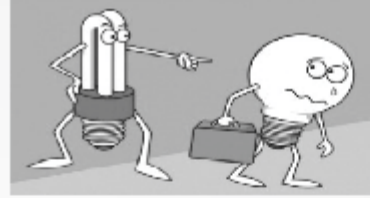
राजभाषा हिन्दी अनुभाग



## जन-भागीदारी

### स्वच्छ भारत

घर घर में फैला अंधेरा,  
हुआ दूर अंधकार ना सारा।  
आओ हमसब बिजली बचायें,  
हर घर को रौशन बनायें।।



बचा पेट्रोलियम का भण्डार है थोड़ा,  
सड़कों पर लगा वाहनों से जाम निंगोड़ा।  
यथासंभव सार्वजनिक वाहन अपनायें,  
देश की प्रगति में हाथ बँटायें।।

कटे वृक्ष और संतुलन बिगड़ा,  
चहुँओर हुआ प्रदूषण पूरा।  
आओ अधिकाधिक पेड़ लगायें,  
पर्यावरण को हरा बनायें।।



गांधीजी का स्वप्न अधूरा,  
हम सबको गंदगी ने घेरा।  
आओ मिलकर हाथ बढ़ाये,  
एक नया "स्वच्छ भारत" बनायें।।

- मनोज कुमार

सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक)

## हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2017 पर संक्षिप्त रिपोर्ट

केन्द्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, आयुक्तालय, कोच्ची ने केन्द्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, लेखा परीक्षा आयुक्तालय, कोच्ची के साथ संयुक्त रूप से दिनांक 25.09.2017 से 06.10.2017 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया। हिन्दी दिवस मनाते हुए समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री पुन्नेला नागेश्वरा राव, प्रधान आयुक्त महोदय ने अपने संदेश में कहा कि " हिन्दी की प्रगति के लिए इस आयुक्तालय में हिन्दी पखवाड़ा समारोह विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा। सभी अधिकारियों से अनुरोध है कि आप अपने-अपने कार्यालय कार्य जैसे टिप्पणी और मसौदा, पत्राचार, बिल तथा रजिस्ट्रारों में प्रविष्टि आदि कार्यों को जितना हो सके हिन्दी भाषा के माध्यम से निपटाने का प्रयास करें। हिंदी में बात-चीत करें और बैठकों में चर्चा के लिए हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। राजभाषा अधिनियम 1963 का विशेष ध्यान रखें और राजभाषा नियम 1976 के विभिन्न तयनों का अवश्य पालन करें।"

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दौरान अधिकारियों के लिए कुल 6 प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं जिसमें गैर हिन्दी भाषी अधिकारियों तथा हिन्दी भाषी अधिकारियों के लिए भी विभिन्न प्रतियोगिताएं चलायी गयीं। अधिकारियों के बच्चों के लिए चार ग्रुपों में दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं थीं।

चलायी गयीं प्रतियोगिताओं के नाम और विजेताओं के नाम निम्नलिखित हैं।

हिन्दी पखवाड़ा, 2017 के दौरान अधिकारियों के लिए तथा उनके बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम

प्रतियोगिताएं	स्थान	अधिकारियों के नाम
1 हिन्दी हस्तलेखन प्रतियोगिता	प्रथम	श्रीमती नाजिया पी.ए. (के.उ.शु.)
	द्वितीय	श्रीमती स्नैम्या पी. (के.उ.शु.)
	तृतीय	श्री दुर्गेश कुमार जांगिड (लेखा परीक्षा)
	सांत्वना	श्री प्रदीप कुमार (के.उ.शु.)
	सांत्वना	श्रीमती अंजु के यू (के.उ.शु.)
2 हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता	प्रथम	श्री प्रदीप कुमार (के.उ.शु.)
	द्वितीय	श्री अशोक कुनार (के.उ.शु.)
	तृतीय	श्री मनोज कुमार (के.उ.शु.)
3 हिन्दी टिप्पणी एवं आलेखन प्रतियोगिता	प्रथम	श्री सूरज कुमार (लेखा परीक्षा)
	द्वितीय	श्रीमती अंजु के यू (के.उ.शु.)
	तृतीय	कु मन्लिका कौशिक (के.उ.शु.)
4 हिन्दी सुष्ठु संगीत प्रतियोगिता	प्रथम	श्री प्रजीत के पी (के.उ.शु.)
	द्वितीय	श्री गौरव प्रताप सिंह (लेखा परीक्षा)
	तृतीय	श्री के वेणुगोपाल (के.उ.शु.)

5	हिन्दी अंताक्षरी प्रतियोगिता	तृतीय	श्री के के मोहनन (के.उ.शु.)	
		प्रथम	श्री गौरव प्रताप सिंह (लेखा परीक्षा), श्री सूरज कुमार (लेखा परीक्षा)	
		द्वितीय	श्री आनंद बाबु (के.उ.शु.) श्रीमती जैस्मिन बशीर कावुपुरायिल (के.उ.शु.)	
6	प्रश्नोत्तरी	तृतीय	कु किरण शर्मा (के.उ.शु.) कु महिमा दीक्षित (के.उ.शु.)	
		प्रथम	श्री प्रदीप तँवर (के.उ.शु.) श्री सुमित नेहरा (के.उ.शु.)	
		द्वितीय	श्री मनोज कुमार (के.उ.शु.) कु मल्लिका वृंशिक (के.उ.शु.)	
7	बच्चों की प्रतियोगिताएँ कविता पाठ गुप -1	तृतीय	श्री गौरव प्रताप सिंह (लेखा परीक्षा), श्री सोमिल रस्तोगी (के.उ.शु.)	
		प्रथम	रांजना महेश	
		द्वितीय	ऐशल हाब यूसुफ	
		तृतीय	अनखा एम् एस	
		कविता पाठ गुप -3	प्रथम	मेघना महेश
		कविता पाठ गुप -2	प्रथम	वैष्णवी एस
		हस्तलेखन गुप -4	प्रथम	संजना महेश
			द्वितीय	अनखा एम् एस
			तृतीय	ऐशल हाब यूसुफ
		हस्तलेखन गुप -3	प्रथम	मेघना महेश
हस्तलेखन गुप -2	प्रथम	वैष्णवी एस		

सभी विजेताओं को नन्द पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए गए ।

हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 06.10.2017 को अपराह्न 3.30 बजे आयुक्तालय के सभागार में श्री पुल्लेला नागेश्वर राव, आई आर एस, मुख्य आयुक्त, कोच्चि की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । श्री मुहम्मद यूसुफ, आई आर एस, लेखा परीक्षा आयुक्त, कोच्चि भी समारोह में उपस्थित थे। सभी वरिष्ठ अधिकारी तथा बहु संख्या में कनिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी पखवाड़े के समापन समारोह में उपस्थित थे । प्रार्थना गीत के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ तथा कार्यक्रम संचालक श्रीमती रोसेलिन्ड जोस थॉमस कोरुत, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा प्रारंभिक परिचय देने के बाद श्री अमरनाथ केसरी, संयुक्त आयुक्त ने सभी व्यक्तियों का स्वागत किया।

इस समापन समारोह में श्री पुल्लेला नागेश्वर राव, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क कोच्चि क्षेत्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आयुक्तालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए



किए जा रहे विभिन्न कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया और राष्ट्रीय एकता और बोलचाल के लिए हिन्दी और अँग्रेजी के साथ साथ प्रांतीय भाषा के महत्त्व के बारे में भी बताया ।

श्री पुल्लेला नागेश्वरा राव, मुख्य आयुक्त, कोच्चि क्षेत्र के कर कमलों से प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत सभी अधिकारी और बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

इस समारोह में उपस्थित व्यक्तियों के मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया । श्री प्रजीत के पी. एवं श्री गौरव प्रताप सिंह ने गीत प्रस्तुत किया । सभी उपस्थितों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई थी । कार्यक्रम के अंत में श्रीमती सुजाता एस., अधीक्षक, लेखा परीक्षा आयुक्तालय ने हिन्दी पखवाड़ा समारोह से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अधिकारियों को धन्यवाद किया । सायं 4.30 बजे राष्ट्रीय गान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ ।

\*\*\*\*\*

राजभाषा अनुभाग

## चुटकुले

1. एक आदमी को मच्छर ने दिन में काटा। आदमी-यार अब दिन में भी काट रहे हो? मच्छर- क्या करूं भाई, घर में मां-बाप बीमार हैं, बहन जवान है और लड़के वालों ने दहेज में एक लीटर खून मांगा है।

XXXXXXXXX

2. चंदू मियां हर रात को अपने किचन में जाकर, शक्कर का डिब्बा खोलते और बंद करके फिर सो जाते ! . . . आखिर क्यों.....? . . . क्योंकि डॉक्टर ने कहा था कि.....उन्हें शुगर की प्रॉब्लम है..... . . . रोज अपनी शुगर चैक करना...!

XXXXXXXXXX

## चुटकुले

### 3. दूथ ब्रश की रिटायरमेंट!

एक बार एक कॉन्फ्रेंस चल रही थी, जहाँ पर दुनिया भर से अलग अलग देशों के प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे थे। संचालक ने सभी से एक सवाल पूछा कि दूथ ब्रश कितने समय के बाद रिटायर हो जाता है?

सब ने अलग अलग जवाब दिए। किसी ने कहा, एक हफ्ता, किसी ने एक महीना, किसी ने दो महीने तो किसी ने तीन महीने।

अब बारी आई हिंदुस्तानी प्रतिनिधि की। जब उनसे यह सवाल पूछा तो उन्होंने इसका जवाब कुछ यूँ दिया, "हिंदुस्तान में दूथ ब्रश कभी रिटायर नहीं होता। क्योंकि सब से पहले तो दूथ ब्रश दाँत साफ करने के काम आता है, फिर उसका इस्तेमाल बाल में रंग लगाने के लिए होता है, उसके बाद मशीन की सफाई करने के काम आता है और जब उसके बाल पूरी तरह से टूट जायें तो उसका इस्तेमाल पजामे में नाड़ा डालने के लिए किया जाता है। इस तरह दूथ ब्रश कभी भी रिटायर नहीं होता।"

XXXXXXXXXX

### 4. शादी के बाद!

पति: इस दिन का तो मुझे कब से इंतजार था।

पत्नी: तो मैं जाऊँ?

पति: ना, बिल्कुल ना।

पत्नी: क्या तुम मुझसे बहुत प्यार करते हो?

पति: हां, पहले भी करता था, करता हूँ और आगे भी करता रहूँगा।

पत्नी: क्या तुम कभी मेरे साथ धोखा करोगे?

पति: ना, इससे अच्छा तो यह होगा कि मैं मर ही जाऊँ।

पत्नी: क्या तुम मुझे हमेशा प्यार करोगे?

पति: हमेशा।

पत्नी: क्या तुम मुझे कभी मारोगे?

पति: ना, मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ।

पत्नी: मैं, क्या तुम पर भरोसा कर सकती हूँ।

पति: हां।

पत्नी: ओ हो... डार्लिंग।

शादी के बाद:

कृपया इस मैसेज को नीचे से ऊपर की ओर पढ़ें।

XXXXXXXXXX

# SpasibaMoskva



## **June 2018- Russia- The dream begins**

11<sup>th</sup> June 9 AM- Moscow . We were shivering in the cold and we found it tough to adapt to the climate. Language was our next barrier as none of us knew Russian. Google Translate came to our rescue in most of the occasions. We had our rooms booked through airbnb and we somehow arranged a taxi and reached our place. First day passed easily because of our tiredness

## **Russia Day**

The next day we went to Moscow City Centre. The Kremlin and the beautiful and historic Red Square are the main attractions there. We were surprised to see a huge crowd in the city centre. Only then did we come to know that June 12<sup>th</sup> of every year is celebrated as Russia Day to commemorate the adoption of the Declaration of State Sovereignty of Russian Republic. Football fans from all over the world joined the celebrations and we witnessed various Russian Cultural programmes.

The next 2 days we came across the fans from all the 32 participating countries. The South

American fans were the most energetic and happy souls.

Luzhniki Stadium, Moscow

## **The Mundial begins**

On 14<sup>th</sup> June the 2018 Fifa World Cup was officially inaugurated. The inaugural ceremony was really mindblowing. After the ceremony the first match was kicked off in style. The hosts Russia took on Saudi Arabia. Russia won by a huge margin, 5-0 and this triggered ecstatic celebrations from the Russian fans.

## **FIFA Fan Zones**

FIFA had arranged Fan Zones outside every stadium. Fan Zones were quite stunning. Very big screens and big stages were set. Famous pop singers and DJs used to come and unleash the fun. All of us partied hard before and after the match. The fans used to come in respective jerseys and other traditional outfits. All the matches were screened live on big screen. Out of the 64 matches in total, a person can make it to 3 or 4 matches at the most, because the venue stadiums were all far away and 2 or 3 matches were there everyday. That was the reason why FIFA set these Fan Zones up in such a grand fashion.



### **Jimmy,JimmyAaJaa**

The most surprising fact that we found out was Russians' love for Hindi movies in general and MithunChakraborty in particular. Every person would ask us whether Mithun Da was doing good. They will take their cellphone out and play "Jimmy,JimmyAaJaa " or "I am a disco dancer". Later we found out that in 1980's and 90's Hindi movies dubbed to Russian were the main means of entertainment to Russian people.Raj Kapoor and DevAnand also have a good fan following but Mithun Da is still their heartthrob.

### **Spasiba**

Language was a major issue for us but the cooperation and hospitality of Russians deserve admiration.Whenever we ask a doubt they will make sure that our problem is solved somehow, either through translate app or by asking their friends nearby. Spasiba means Thank You in Russian. That was the only word that we knew.After the conversation we would say 'Spasiba' and then they will laugh and give us a hug or a shakehand. They are really proud of their language and heritage.

### **June 20The Big Day –Spain Vs Iran**

This match was special for many reasons. This was the first ticket that we got through the draw.This was the first time we were going to watch a World Cup Match inside the stadium. Spain,oneof the tournament favourites came up against Asian giants Iran . We were really thrilled to know that our seat was just behind the goal post. We could see all the stars from a very close range.The atmosphere inside the stadium was

unbelievable. Iran fans were the majority there and all were singing and dancing and cheering up their team. I called most of my friends and relatives through video call to show them the atmosphere. The match was a closely fought contest and in the end Spain came through victorious through a Diego Costa goal.

### **June 22 – Brazil vs Costa Rica...Race against time**

We had no time to relax after the match, because after one day we had Brazil's match at St Petersburg –1500 Kilometres away from Kazan. We somehow made it to St Petersburg on 22<sup>nd</sup> morning. Everywhere in St Petersburg we could see yellow jerseys and Samba dancers from Brazil. Brazil fans were the most cheerful because of their passion for the game. Most of the Brazilians say that each and every day they dream about the next World Cup. Match was at 3 in the afternoon. Though Brazil played really well they found it tough to break the solid Costa Rican defence . No goals were scored inside the 90 minutes but Brazil scored 2 brilliant goals in the 6 injury time minutes and bagged the 3 points at stake.

### **St Petersburg – The most beautiful city in Russia**

St Petersburg , a gorgeous port city is known as the cultural capital of Russia. It is a UNESCO World Heritage Site which includes Hermitage Museum,one of the largest museums in the world.



### **Cliffin, the cyclist.**

Cliffin Francis a Lionel Messi fan from Cherthala, Kerala cycled 4700 Km from Iran to Moscow to watch the World Cup. He was my junior at college and used to be travel enthusiast even in those days. When he first asked my opinion about going to Russia on wheels, I laughed at him. But I was wrong. He overcame all obstacles with his willpower and reached Moscow in 106 days. He had got only one match ticket and I was his guest for that match.

### **France vs Denmark**

It was not a very entertaining match with both France and Denmark playing for a draw. The match ended in a goalless stalemate and both the teams qualified to the next round. It was a great moment for Cliffin though. All his hard work became fruitful and he really seemed to enjoy the match very much.

### **The Volga River**

We took a break from The Moscow City and left for Nizhny Novgorod , a city 600 km away from Moscow. As it was another host city fans were there as well, but the place was less busy compared to Moscow. Next day we went on a Cable Car trip to watch the beautiful Volga river. The cable lines were 5 km long and set at a good height and the view was awesome

### **Food**

Being a non-vegetarian, food was never a big problem during my stay. Meat is the main food there and we tried many varieties of food available. The main Cuisines were Russian,

Turkish, Arabian, Chinese, Uzbek . Compared to India, the KFCs and McDs and Subways were much cheaper. Turkish kebabs and Arabian Shawarmas were really good . Local grilled meat called Shashlik was really delicious.

### **Transportation**

Because of the World Cup the whole public transport system was made available free of cost. As a result trains, buses and metro railway were used by all fans. Also electric buses and frequent underground tunnels demonstrate the great planning done in the Soviet Union Era.

### **Hospitality and hygiene.**

As I mentioned earlier Russians' hospitality was great and people were really cordial and supporting. And they really like Indians very much. We never had a bitter experience from the local people and they were vigilant in avoiding such issues. Another important virtue found in Russians was their cleanliness and hygiene. Wastebaskets are placed in large numbers everywhere and if people find any waste lying on road they will immediately put it inside the basket rather than waiting for the responsible authorities to do the same.

### **Matryoshka dolls**

We went to the famous Arbat Street for shopping and found many unique items of Russian tradition. The most beautiful were the Matryoshka dolls decorated with different ornaments. Matryoshka dolls with footballers' faces were the fresh arrivals thanks to the World Cup. Amber jewellery made from Baltic Amber was another attraction. I





bought some Amber Jewellery for my friends and relatives. Traditional Russian Tea Samovars was another beautiful piece of souvenir worth buying from Russia.

### Flashback: How it all began...

1994 June – My football lover uncle buys a 21 inch Onida Colour TV.

Most of our neighbours used to come in the evenings to watch the FIFA World Cup. Majority of them were supporters of either Argentina or Brazil. I always used to sit very close to the TV because of my acute myopia. Apparently everybody mistook this as my passion for football. That was how I, a 7 year old was officially branded a fan of 'Football- The beautiful Game'. My uncle had his hair styled like Carlos Valderama- The Colombian legend. Romario, Baggio and Maradona were some of the common topics of discussion in those days. Actually I had not realized that I was watching the biggest sporting event in the world. The magnitude, passion and all the related furore were really hard to understand. 2

events completely transformed my outlook.

On 2<sup>nd</sup> July 1994 Andres Escobar, a Colombian player was murdered by a Colombian Fan for scoring an own goal for his country. I was shocked like everyone else.

On 17<sup>th</sup> July Roberto Baggio, the Italian striker missed a penalty in the World Cup Final against Brazil. Baggio was hailed as one of the best performers in the tournament. But this one moment, this missed opportunity changed it all. He became a villain overnight.

While everyone talked about Escobar and Baggio I realized one thing.... That football is not just a

game.....It is life, for many people.

In those days there was no internet, no cable TV, no mobile phones. Doordarshan serials or movies were the only options for entertainment. The major events like Olympics, Asiad, World Cup, Tennis Majors were the most awaited events. Meanwhile the 1998 World Cup had made me an England Fan thanks to Alan Shearer and David Beckham. Beckham's red card against Argentina along with England's exit left me in tears. I slowly realized that I had also become one of 'them'

### The planning process

Each passing world cup made my dream of watching a world cup more intense. I really wanted to feel the adrenaline, the heat and the passion. I planned to go to Brazil to watch the 2014 event. But I couldn't make it to Brazil. I realized that serious planning is needed to make my dream come true. In 2017 October Fifa opened their ticket sales online. I got a serious partner this time, Vivek, my friend from The Income Tax Department. We submitted our entry in the first day of online sales. One month later the results of the lucky draw came, and we got confirmation mail from Fifa that we were selected. One month later 3 more friends joined me and Vivek. We booked flight tickets and some hotel bookings were made. Because these were done well in advance we were able to save a lot of money.



On 28<sup>th</sup> June we bid adieu to the beautiful country and we said for one last time "Spasiba Moskva"

**Anand V. K.**  
Inspector

ओणम समारोह 2017 / Onam Celebrations 2017



# अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस / International Yoga Day





**अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस यात्रा 2018 / International Women's Day Trip 2018**



**अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2018 / International Women's Day Celebrations 2018**





चित्रकला

श्रीमती सुनयना कृष्णन, उप आयुक्त



**अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2018 / International Women's Day Celebrations 2018**





एकजुटता के लिए फुटबॉल शूटआउट **Football shootout for Solidarity**



स्वच्छ भारत अभियान / **Swatch Bharat Abhiyaan**



## “कैरली” पत्रिका विमोचन / “Kairali” Magazine Release



## हिन्दी पखवाडा समारोह/ Hindi Fortnight Celebrations 2017





## विषु 2018 / Vishu 2018



**जी.एस.टी.मंडल उद्घाटन**  
**G.S.T. Division Inaugurations**



**जी एस टी उद्घाटन (मुख्यालय)/ G.S.T. Inauguration (Hqrs.)**



## बच्चों की चित्रकला



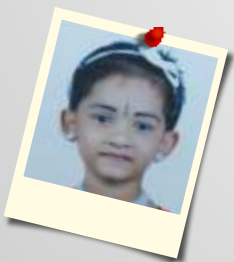
पावना प्रदीप कक्षा -एल के जी  
श्रीमती ए उषा, अधीक्षक की पोती



ईबल यस्मिन, कक्षा - यू के जी  
सुपुत्री श्रीमती जैस्मिन बशीर, क.स.



अयान फिरोज़ हुसैन, कक्षा -2  
सुपुत्री श्रीमती नाज़िया फिरोज़, क.स.



केथरीन मोनीका निक्शन, कक्षा-3  
सुपुत्री श्री निक्शन, अधी.



पवित्रा एस.सेनोय, कक्षा -3  
श्री सुभाष जे शेनोय, निरी.की सुपुत्री



## हमारे खेल सितारे/OUR SPORTS STARS

### एथलेटिक्स /ATHLETICS



श्री के.एम. बिनु /Shri K.M.Binu

अधीक्षक /Superintendent (PRO, CCO, Kochi)

**Olympian and Arjuna Award Winner,2007**

Member of the 4\*400 mtr.relay team of India.Silver medal at the Asian Games held at Doha.

Broke the 38 year record set by the legendary Shri Milkha Singh and reached the semifinals at the Athens Olympic Games.



कु.लिबिया शाजी / Ku. Libiya Shaji

हवलदार / Havaldar

Central Tax and Central Excise, Hqrs. Kochi

1<sup>st</sup> place in High Jump in All Civil Services Athletics Championship 2016-17 held at Delhi.

1<sup>st</sup> place in High Jump in All Civil Services Athletics Championship 2018 held at Guntur.

1<sup>st</sup> place in High Jump in All India Central Revenue Sports meet held at Mumbai in 2017



श्री नीरज सी.एम./ Shri Neeraj C.M.

हवलदार / Havaldar

Thrissur Division

World University Athletics Meet 2013 Russia 800 Mtr Race Participation

All India Inter University Athletics Meet 2013 Kolkata 800 Mtr Gold Medal

### बैडमिंटन / BADMINTON



श्री सनेव थॉमस /Shri Sanave Thomas

अधीक्षक / Superintendent

Commissionerate of Customs Preventive,

**Bronze medal in Commonwealth games at Melbourne in 2006**

Gold medal in Men's Badminton doubles in SAF Games at Columbo in 2006

Commonwealth Games Silver Medal in the Badminton Team Championship held at New Delhi 2011

SAF Games Gold Medal in Men's Doubles and Men Team Championship held at Dhaka 2011

New Zealand Open Grand Prix Winner in 2010

Bitburger Open Grand Prix Men Doubles Champion in 2009 -10 held at Germany

Representing the country for the last ten years in various International Tournaments and also World Championships, Asian Games





**श्री अनीष के.ए/ Shri Aneesh K.A.**

निरीक्षक / Inspector, Customs Preventive, Headquarters  
2017 World Championships Silver Medallist in 40+ Category  
Singles

**बास्केट बॉल / BASKETBALL**



**श्री सण्णी थॉमस / Shri Sunny Thomas**

निरीक्षक / Inspector  
Commissionerate of Customs Preventive  
Represented Indian Team in the International Championship  
held at Manila, Philippines-2005



**श्री सुभाष जे.शेनॉय / Shri Subash J. Shenoy**

निरीक्षक / Inspector  
Central Tax and Central Excise, Hqrs. Kochi  
International Basketball Player  
Represented India in the FIBA Asian Stancovic Cup at Taiwan  
in 2004.  
Member of the winning Indian Team in the South Asian  
Basketball Championship at Guwahati in 2004.  
Represented India in the Champion's Trophy at Manila in 2005.



**श्री विवेक वी./Shri Vivek V.**

अधीक्षक /Superintendent  
Commissionerate of Customs Preventive, Hqrs.  
International Basketball Player  
Represented India at the qualifying tournament of Stancovic Cup  
at Bangalore in 2005.  
Member of Kerala State Team runners in the national Basketball  
Championship held at Jaipur in December 2006  
Represented Indian team in SAAF Championship  
Former state team captain  
Played 6years for Kerala team



**श्री बेसिल फिलिप /Shri Basil Philip**

निरीक्षक / Inspector  
Central Tax and Central Excise(Audit)Circle- 4  
Fiba Asia Cup-Tokyo,Japan-2012  
Winner of South Asian Basketball Championship-Delhi -2013  
Winner of South Asian 3\*3 Basketball Championship (Captain)-  
Columbo,Srilanka-2015  
Fiba 3\*3 World Tour (Captain)-Beijing,China-2015  
Winner of South Asian Basketball Championship -Bangalore-  
2016  
38<sup>th</sup> William Jons Cup-Taiwan -2016  
FIBA Asia Challenge-Tehran,Iran-2016  
39<sup>th</sup> William Jons Cup-Taiwan - 2017

	<p><b>श्री इद्रिक पेरेरा / Shri Eudrik Pereira</b>  निरीक्षक /Inspector  Aluva Divison  Asian Games Participant</p>
	<p><b>श्री सिनुमोन अगस्टिन /Shri Shinamon Augustin</b>  निरीक्षक /Inspector  Ernakulam Range 4  Former State Basketball Team Captain,  8 Times Represented Kerala State Team  Attended Senior Indian Team Camp</p>
	<p><b>श्री मोनीष विल्सन/ Shri Moaish Wilson</b>  निरीक्षक /Inspector  Hqrs Preventive Unit  Captain of Indian Team for the 17<sup>th</sup> Junior Asian Basketball  Championship held at Kuwait 2002  Represented India in the 16<sup>th</sup> Asian Championship held at  Russia 2000  Represented India in the under 21 Asian Invitation Tournament  held at Kuwait 2003  Represented Kerala State Senior Team for the Senior Nationals  from 2001 to 2015</p>
	<p><b>श्री मनोज आर./Shri Manoj R.</b>  निरीक्षक /Inspector  Central Tax and Central Excise, Aluva Divison  Former State Basketball Team Captain  10 Times Represented Kerala State Team  Won Gold Medal for Best Men Player in Kerala  Attended Senior Indian Team Camp</p>
	<p><b>श्री अभिलाष टी.एस./Shri Abhilash T.S.</b>  निरीक्षक /Inspector  Review Cell, Hqrs.  Former State Basketball Team Captain  12 Times Represented Kerala State Team  Won Gold Medal for Best Men Player in Kerala</p>
	<p><b>श्री जो एंटनी/ Shri Joe Antony</b>  निरीक्षक /Inspector  Audit hqrs  Former state team captain  Played 8years for state team</p>

### वॉली बॉल / VOLLEYBALL



**श्री एस ए मधु /Shri S.A.Madhu**  
अधीक्षक / Superintendent (PRO)  
Central Tax & Central Excise, Hqrs. Office, Kochi  
International Volley Ball Player.  
Played for the country from 1987 to 1995.

### फुट बॉल / FOOTBALL



**श्री पी.आर. हर्षन/Shri P.R.Harshan**  
हवलदार / Havaldar  
Aluva Range  
International Football Player. Participated in the qualifying rounds of Olympics in 1991.  
Represented Kerala State Football team in seven Santhosh Trophy National Championships and won Championship in 1992 & 1993.



**श्री एम.के.सुनिल /Shri M.K.Sunil**  
हवलदार /Havaldar  
Thrissur Division  
Represented Kerala State Football team in Santhosh Trophy National Championships in 1998,2000,2001 and 2004(Won the Championships in 2004)



**श्री बिजिष बेन ए/ Shri Bijish Ben A.**  
अधीक्षक / Superintendent (PRO)  
Central Tax & Central Excise, Hqrs. Office, Thiruvananthapuram  
Playing: Represented Kerala State football team in Eight Santhosh Trophy National Championships from 2004 to 2011(Captioned the Team in 2011 and won the Championships in 2004)  
Coaching: Asian Football Federation football instructor  
Asst. Coach of Santhosh Trophy Winning Kerala football Team in 2018.



**श्री हमीद के.के./Shri HAMEED.K.K.**  
निरीक्षक /Inspector  
Customs Preventive Headquarters, Cochin.  
Asst. Coach of U-19 Indian Team.  
Asst. Coach of Santhosh Trophy and National Games Kerala team  
Chief coach of U-14 Kerala Team,  
Chief Coach of Central Excise Football team.



# I had a friend

I had a friend. She was the most amazing person in the world. She could make anything fun. I used to lie on the wet grass with her and make up shapes in the clouds, constellations in the night sky. When it rained, I used to sit up, ready to run for cover and then her soft hand would wrap around my wrist and she would look deep into my eyes and whisper 'stay'. And next thing I knew, I was on the grass, and raindrops were splashing on my face. And her fingers would still be around my wrist; soft, yet tight.

It was easy to classify the relationship as love. Whenever I saw her lips, I had this mad desire to kiss her, to wrap my hands around her, hold her face, and kiss her. I could do that forever. I would take her in my arms and away from a ruthless world full of evil and hurt. We would build a small house near the foothills. There would be a banyan tree, and a small stream and a few dogs, and...

But it was not love. It was not lust. It was something much more basic. I could say it was complicated but the simple truth was, it was not. It was simple. Something pure. So pure that our moment in the rain would last an eternity. And yet it would end too soon.

One day she called me at night. She sounded different. She was not the girl I knew. Something was missing from that voice. Something felt very wrong.

Then she asked me a simple question. "Do you love me?" I answered in a heartbeat. "Always have, always will." "I was afraid of that." She answered. Then she cut the line. I called her back repeatedly to ask why, but she never answered.

The next day newspapers carried a small column describing how a girl was found unconscious in her hostel room. It went on to say that the doctors declared her brought dead. There were numerous injury marks on her body and physical abuse was suspected. The column gave more details but the rest of the lines were very blurry. I never went to the funeral. I never said goodbye. I never will.

I am lying on the wet grass, almost eight years later. Raindrops are falling on my face, masking my tears. If I close my eyes, I can still feel that soft hand on my wrist. I want to get up, leave, gather my life back together, forget, move on. But I still hear her whispering 'stay'. Finally I have the answer to my question. She wanted me to be happy. And she knew that the wound she was about to make would cripple me for life. She ended her pain and gifted me mine. Tears continue to mix with the raindrops, making them a tad saltier, but they fail miserably to wash away my pain.

I had a friend.

Jacob George  
Inspector



# OUT THERE

Ill advised, I stepped onto crust,  
Blanked, under a sky full of studs,  
Received, flowers but not the fruits,  
Realised, absence was just absence of presence,  
Witnessed, thunders break itself apart,  
Perceived, rain loses its purity out in the ocean,  
Observed, sun sets to start all over again.

A wiseacre once advised,  
Out there was the best of inspiration.  
Out there screamed back,  
Meet actuality, where pain becomes your muse.

**ROHIT RAMACHANDRAN**

(S/o. Shri M.R. Ramachandran, Supdt.)



# നീതിദേവതക്ഷോട്...

ഇരയെന്നവൾക്കിന്നോമനപ്പേര്  
ഇരയാണവളെന്നു മൊഴിയുന്നു ലോകം  
വിഷബാധമുത്തൊരാ നായ കുടിച്ചു  
കൂടഞ്ഞൊരാ പെണ്ണിനിന്നിരയെന്നുപേര്.

സ്വന്തമായ് പേരില്ല നാടുമില്ല,  
അച്ഛനില്ല സ്വന്തമമ്മയില്ല  
ഇന്നേവരേയവൾ ജീവിതപ്പാതയിൽ  
നേടിയെടുത്ത നേട്ടങ്ങളില്ല.

കഥകളുണ്ടിന്നേറെയവളിലെ പെണ്ണിന്റെ  
ചകിലേയ്ക്കനിയും കഠാരപോലെ  
ഇന്നേവരേയവളെയറിയാത്തവർ പോലും  
ചൊല്ലിരസിക്കുന്ന കെട്ടുകഥകൾ.

കുകിപ്പായുന്ന തീവണ്ടിയോ ?  
ജനസമുദ്രം നിറയും നഗരമധ്യങ്ങളോ ?  
സ്വന്തം വീടിന്നുൾത്തടമോ ?  
ആരാരു പെണ്ണിനീ പേരുന്നൽകി ?...

ജിഷയെന്നവൾക്കെന്നു പേര് , ജ്യോതി,  
സൗമ്യ - അങ്ങനെയായിരം പേര്  
ഉണ്ടായിരുന്നു അവൾക്കും കഴുത്തിന്നുമേലെ  
മങ്ങാതെന്നിന്ന ശിരസ്സും  
ഇരുമിഴി കുറുത്ത തുണികൊണ്ടുകെട്ടി  
നീതിപീഠത്തിന്നു മുന്നിലായ്നിൽക്കും  
നീതിദേവതയെന്നുഞാൻ ചോദിച്ചോട്ടെ  
നിൻ തുലാസിൽ താഴുന്നുവോ ചാമി ?'

ഇരയല്ല അവളുടെ ഗർഭപാത്രത്തിന്റെ  
ആഴങ്ങളിൽ കമ്പിയാഴ്ത്തിയത്  
ഇരയല്ല താനേയവളുടെ മാനം -  
കെടുത്തിയിട്ടവളെ കൊല്ലുന്നത്.

നിന്റെ മിഴികൾ ഇറുക്കിയടയ്ക്കുന്ന  
ശീല വലിച്ചെറിയു ന്നായദേവതേ,  
കൺതുറന്നെന്നിട്ടു കാണു, നേരോടെ-  
കണ്ണുതുറന്നിട്ടു നോക്കു ...  
നിന്റെ ശീല വലിച്ചെറിയു ...

അപർണ്ണ ശങ്കർ  
D/o. Smt. M.K. YASODA, A.O.



# വൈദ്യൻ

ഉച്ച മുതൽ മകളെ കാത്തിരിക്കുകയാണ് വൈദ്യൻ. കുട്ടികൊണ്ട് പോകാൻ വരുമെന്നു ഇത്രയും കാലത്തിനിടയ്ക്ക് ആദ്യമായി അവൾ പറഞ്ഞതിന്റെ ആശ്ചര്യമാണ് അയാളുടെ മുഖത്ത്. ഏകാന്തത കുറെ കാലമായി വൈദ്യനെ അലട്ടുന്നു. ആതുരപ്പാലത്തിൽ രോഗികൾ അപൂർവ്വം. വേറെ ഒരു പണി ചെയ്യുവാൻ താൽപര്യമില്ല. ശൂന്യമായി ലേക്ക് എത്രനേരം നോക്കി നില്ക്കാനാകും. പിന്നെ, നേരം കളയാൻ വേണ്ടി, പഠിച്ച ഗ്രന്ഥങ്ങൾ വീണ്ടും വായിക്കാൻ ശ്രമിച്ചു. അതങ്ങനെ തുടരവേ ആർജ്ജിച്ച അറിവ് പുതുക്കാനുള്ള ആഗ്രഹം എവിടെയോ കളഞ്ഞും പോയി. അനുഭവം ഇനിയും ബാക്കിയുണ്ടല്ലോ, ഇനി അത് വച്ച് കാലം കഴിക്കാം എന്നൊക്കെ ആശ്വസിച്ചു. മുറിയിൽ ഇരുന്ന് മടുക്കുമ്പോൾ കുറെ നേരം വാതിൽക്കൽ പോയി പുറത്തേക്ക് നോക്കി നിൽക്കും. അങ്ങനെ ഓരോ ദിവസവും സമയം തള്ളി നീക്കി കൊണ്ടിരുന്നു.

ഒരിക്കൽ അങ്ങനെ നോക്കി നിൽക്കുമ്പോഴാണ് പുറത്തെ അരമതിലിൽ വച്ചിരുന്ന കൊറ്റിയുടെ ഭംഗി കണ്ണിൽ പെട്ടത്. ഇത്ര നാളും അത് അവിടെത്തന്നെ ഉണ്ടായിരുന്നതാണെങ്കിലും പെട്ടെന്ന് അതിന്റെ സൗന്ദര്യം നന്നായത് വർദ്ധിച്ചു പോലെ. സിമന്റിൽ തീർത്തതാണെങ്കിലും അത് വാർത്തെടുത്ത ശില്പിയോടു ഒരു ബഹുമാനം തോന്നും. അത്രമാത്രം കരവിരുതോടെയാണ് കൊറ്റിയെ തീർത്തിരിക്കുന്നത്. എന്നും കുറച്ചു നേരം കണ്ട് കണ്ട് ജീവൻ ഇല്ലാത്തതാണെങ്കിലും അതുമായി എന്തോ

ഒരു ആത്മബന്ധം വൈദ്യനിൽ ഉടലെടുത്തു. പിന്നീട് എപ്പോഴും അവനെ കണ്ടു കൊണ്ടിരിക്കണമെന്ന് തോന്നി.

കാലം ഏത് ബന്ധത്തിന്റെയും തീവ്രത കൂട്ടുമല്ലോ. അവർ ക്രമേണ ഉറച്ചങ്ങാതിമാരായി മാറി. വിരസതയുടെ ശല്യം സഹിക്കാതായപ്പോൾ ഒരു സായാഹ്നത്തിൽ മുറ്റത്തെ അര മതിലിൽ കാലങ്ങളോളം മഴയും വെയിലും ഏറ് കിടന്നിരുന്ന കൊറ്റിയെ എടുത്ത് വൈദ്യൻ തന്റെ മേശപ്പുറത്തേക്ക് മാറ്റി.

അവിടെ രണ്ടു ഗ്രന്ഥങ്ങളെ ഉണ്ടായിരുന്നുള്ളൂ. അഷ്ടാംഗ ഹൃദയവും സഹസ്രയോഗവും. അവയ്ക്കൊപ്പം ഇടം കിട്ടിയപ്പോൾ കൊട്ടാരത്തിലെ രാജഹംസത്തിന്റെ സ്ഥാനമായി കൊറ്റിക്ക്. അവന്റെ ഇടത്തുംവലത്തും ദൈവങ്ങൾ. ഒരു വശത്ത് പിള്ളയിൽ കൊത്തിയ ഗണപതിയും മറു വശത്ത് നഗ്ന ഗാത്രനായി പുല്ലാകുഴൽ ഉഴുതി നിൽക്കുന്ന കാർവർണ്ണനും.

കരുണാകര ഔഷധാലയത്തിലെ വൈദ്യന് ജീവിതത്തോട് തന്നെ മടുപ്പായി എന്ന് അയാളെ പരിചയമുള്ളവർക്ക് അറിയാം. എല്ലാവരും വലിയ രോഗികൾ ആയതു കൊണ്ട് ചെറിയ രോഗത്തിന് ചികിത്സയുമായി നില്ക്കുന്ന പഴയ വൈദ്യനെ ആർക്കും വേണ്ടാതായി. വേറെ ഒരു ചികിത്സയും ഫലിക്കാതെ വരുമ്പോൾ അവസാന ആശ്രയമെന്ന നിലയിൽ ഒരു പരീക്ഷണത്തിന് വരുന്നവരെ ചികിത്സിക്കാൻ താല്പര്യം തോന്നാറുമില്ല.

ഇടയ്ക്കിടയ്ക്ക് അയാൾ ഓർക്കാറുണ്ട് പണ്ടത്തെ തിരക്കെല്ലാം.

രോഗികൾക്ക് പകർന്നു കൊടുക്കുവാൻ വേണ്ടി തുറന്നിരുന്ന വലിയ ദരണികളിൽ നിന്ന് പ്രവഹിച്ച ഗന്ധം വൈദ്യന്റെ മുനിയും മുറ്റവും കടന്നു പാതയുടെ അപ്പുറം വരെ പോയിരുന്നു. ഈ ഗന്ധം മാത്രം മതിയായിരുന്നുവത്രെ പലരുടേയും അസുഖം മാറാൻ. ഇവിടെ കൂടി സ്ഥിരം കടന്നു പോകുന്നവരുടെ നാസാരന്ദ്രങ്ങൾ ഈ ഗന്ധം ആസ്വദിക്കാൻ ഇവിടെ എത്തുമ്പോൾ തനിയെ വിടർന്നിരുന്നു. പക്ഷേ, കുറെ കാലമായി ആസ്വദിക്കാൻ ആളില്ലാതെ ദരണിക്കകത്തെ കുട്ടുകൾ വെറുതെ വിറങ്ങലിച്ചു കിടന്നു. അതിലെ തന്മാത്രകൾ ദരണിയുടെ മൂടി ഭേദിക്കാനാകാതെ ഒരു തടവിലെന്നോണം കഴിഞ്ഞു. കാലം പോകെ സഹായികൾ ഓരോരുത്തരായി ഔഷധ ശാലയിൽ നിന്നും പിന്നീട് ഈ ലോകത്തിൽ നിന്നും ഊഴം വച്ച് പിരിഞ്ഞു. വൈദ്യൻ മാത്രം ആതുരശാലയിൽ എന്നോ വരാറിരിക്കുന്ന രോഗിയെ കാത്തു കാത്ത് ഇരുന്നു. ഇരുന്നു മടുക്കുമ്പോൾ വാതിൽക്കൽ പോയി വെറുതെ നിന്നു. പാതയ്ക്ക് ഇരു വശത്ത് കൂടി പൊയ്ക്കൊണ്ടിരുന്നവരെ കണ്ടു മടുക്കുമ്പോൾ വീണ്ടും കസേരയെ തന്നെ ശരണം പ്രാപിച്ചു. കാലക്രമേണ പാതയിൽ കൂടി നടന്നു പോകുന്നവരുടെ എണ്ണം കുറഞ്ഞു. മോട്ടോർ വണ്ടികളുടെ എണ്ണം കൂടി. ഇന്നിപ്പോൾ പാതയെല്ലാം ഹൈ വേ ആയി. അതിനു മുകളിൽ മെട്രോ ട്രെയിനും വന്നു. കാലം മാറുമ്പോൾ നമുക്ക് മാറാൻ വയ്യാത്തത് കൊണ്ട് വഴി മാറി കൊടുക്കുക എന്നതാണു ബുദ്ധി എന്നു വൈദ്യൻ അവസാനം കണ്ടെത്തി.

ഒരു ദിവസം കൊറ്റിയെ കയ്യിലെടുത്ത് താലോലിച്ചുകൊണ്ടിരുന്നപ്പോൾ അതിനെ ഒന്നു കൂടി സുന്ദരൻ ആക്കണമെന്ന് തോന്നി. പിറ്റേന്നു വൈദ്യശാലയിലേക്ക് വരുന്ന വഴി കുറച്ചു പെയിന്റും ഒരു ബ്രഷും

വാങ്ങി, അവന് മനോഹരമായ തൂവലുകൾ വരച്ചു ചേർത്തു അതിന്റെ പുതിയ രൂപം കണ്ടപ്പോൾ തന്റെ കലാ വാസനയിൽ അന്ന് വൈദ്യന് ആദ്യമായി അഭിമാനം തോന്നി. കുട്ടുകാരന് ഒരു പേരുമിട്ടു. സാംപൻ ദൈവത്തിന്റെ പര്യായപദം.

സപ്തതി കഴിഞ്ഞ ഉടനെ തന്നെ മരണത്തെ പുൽകാൻ തയ്യാറായതാണ് കരുണാകരൻ വൈദ്യൻ. അച്ഛൻ വിട പറഞ്ഞതു എഴുപത്തി രണ്ടിലായിരുന്നു. അതിനപ്പുറത്തേക്ക് ജീവിക്കണമെന്ന് വലിയ ആഗ്രഹമില്ലായിരുന്നു. ഒരിക്കൽ അത് പറഞ്ഞപ്പോൾ മുത്തവൾ കളിയാക്കി. 'അച്ഛൻ ഇനിയും ഒരു 20 കൊല്ലവും കൂടി സുഖമായി അങ്ങ് പോകും'. ഷുഗറും പ്രഷറും ബാധിക്കാത്തത് കൊണ്ട് മറ്റ് ചില സ്ഥിതി വിവര കണക്കുകൾ ഒക്കെ വെച്ചിട്ടാണ് അവൾ പറയുന്നത്. ശരാശരി പുരുഷന്മാരിൽ ഇത്ര, ശരാശരി കൊളസ്ട്രോൾ ഇത്ര, എന്നിങ്ങനെ. അതിനാൽ അച്ഛൻ ശരാശരി ഇത്ര നാളെ ജീവിക്കും അതാണ് അവളുടെ കണക്ക്. എപ്പോഴും എല്ലാം ശരാശരിയായി നിൽക്കണം. അതാണ് ആരോഗ്യത്തിന്റെ ലക്ഷ്യമത്രേ. ഒരു തരം ശരാശരി സിദ്ധാന്തം. അതിനു മുകളിലേക്കൊരാഴ്ചക്കൊ പോയാൽ കുഴപ്പം. ആധുനിക വൈദ്യശാസ്ത്രം പഠിച്ച അവർ അക്കങ്ങളും കണക്കും ഗ്രാഫും ഒക്കെ വെച്ചിട്ടാണ് ചികിത്സിക്കുന്നതും. പ്രകൃതിയുടെയും ദൈവത്തിന്റെയും കണക്ക് അവർക്കു അറിഞ്ഞു കൂടല്ലോ. അയാൾ ഇടയ്ക്കിടയ്ക്ക് വിചാരിച്ചു.

വിദേശത്തു നിന്ന് ഇപ്പോൾ അവധിക്കു വന്നതാണ് മകൾ. അച്ഛനെ തനിച്ചാക്കിയിട്ടു പോകാൻ അവർക്കു മടി. ഓരോ വർഷവും അവധിക്കു നാട്ടിലെത്തുമ്പോൾ ഓരോരുത്തർ



ഇല്ലാതാകുന്നുവത്രെ. കഴിഞ്ഞ അവധിക്കു നാട്ടിലെത്തുമ്പോഴേക്കും അമ്മ പോയിരുന്നു. മുൻ വർഷങ്ങളിൽ വന്നപ്പോഴൊക്കെ അച്ഛനെയും അങ്ങോട്ട് കൊണ്ടു പോകാൻ അതുകൊണ്ട് അവൾ പരമാവധി ശ്രമിച്ചതാണ്. ഇത്തവണ ഒരു ശ്രമവും കൂടി നടത്തുവാൻ രണ്ടും കല്പിച്ചാണ് വരവ്. ഈ വർഷം എഴുപത്തിരണ്ട് ആകുന്നത് കൊണ്ട് അവൾക്കു ഇത്തിരി പേടിയും ഉണ്ട്. ഇനി എങ്ങാനും അച്ഛൻ പലപ്പോഴായി പറയുന്നത് പോലെ സംഭവിച്ചാലോ. അമ്മ പെട്ടെന്നു മരിച്ചതിന് അച്ഛന്റെ പഴയ ചികിത്സ ക്രമത്തെ അവൾ പലപ്പോഴും കുറ്റപ്പെടുത്തുകയും ചെയ്തിട്ടുണ്ട്. അമേരിക്കയിൽ ആയിരുന്നെങ്കിൽ അമ്മ ഇനിയും കുറെ വർഷം കൂടി ജീവിച്ചിരിക്കുമായിരുന്നുവത്രെ.

പതിവ് പരിപാടികൾ ഒക്കെയായി സമയം കൊന്നു തീരുന്നതിന് മുമ്പ് തന്നെ കൊച്ചു മകളുമായി അവൾ എത്തി. അകത്തു വന്ന പാടെ മകൾ ചോദിച്ചു. 'എന്താ അച്ഛാ, ഇന്നും ഒരു രോഗിയും ഇല്ലായിരുന്നോ?' കളിയാക്കലാണ്.

'ഇനി ഇതും തുറന്നു അച്ഛൻ വെറുതെ ഇവിടുത്തെ വണ്ടികളുടെ പുകയും പൊടിയും അടിച്ചു ഇരിക്കുന്നതിലും നല്ലത് ഇതങ്ങു പുട്ടുനതാ. പത്തു മുപ്പതു കൊല്ലം നോക്കി നടത്തിയില്ലേ അത് മതി.' ആദ്യത്തെ ചോദ്യത്തിന് ഉത്തരം വരുന്നതിന് മുമ്പെ അവൾ തന്നെ കുട്ടി ചേർത്തു.

പ്രത്യേകിച്ചു ഒന്നും പറയാൻ ഇല്ലാത്തത് കൊണ്ട് അയാൾ വെറുതെ ചിരിച്ചു. നരച്ച സമൃദ്ധമായ താടിയിൽ വെറുതെ തടവി. അച്ഛന്റെ താടിക്ക് പതിവിലും നല്ല തിളക്കവും ഭംഗിയും. അവൾ മനസ്സിൽ ഓർത്തു. അമ്മ പോയതിൽ പിന്നെ അച്ഛൻ ക്ഷൗരം നടത്തിയിട്ടില്ല. അച്ഛനും അമ്മയും തമ്മിൽ വലിയ വർത്തമാനങ്ങൾ ഒരിയ്ക്കലും ഉണ്ടായിരുന്നില്ല. എങ്കിലും ഒരാളെ കൂടാതെ മറ്റൊരാൾ ജീവിച്ചിരിക്കാൻ സാധ്യതയില്ല

എന്നു പലപ്പോഴും ഓർത്തിട്ടുണ്ട്. അത്ര മാത്രം കരുതലോടെയാണ് രണ്ടു പേരും പെരുമാറിക്കൊണ്ടിരുന്നത്.

'അമ്മേ നോക്കിയെ മുത്തച്ഛന്റെ ഒറ്റ പല്ല് പോലും കേടായിട്ടില്ല.' കൊച്ചു മകൻ പറഞ്ഞു. മുത്തച്ഛനെ പോലെ മുത്തച്ഛന്റെ പല്ലും. അവൾക്ക് അൽഭുതം. ദിവസവും രണ്ടു നേരവും ഏറ്റവും നല്ല പേസ്റ്റ് ഇട്ടു തേച്ചിട്ടും അവളുടെ പല്ലുകൾക്കെല്ലാം കേടുണ്ട്. ഉമിക്കരിയും കുരുമുളകും മറ്റ് ചില കുട്ടികളും ചേർത്ത് ഉണ്ടാക്കിയ സ്വന്തം ഉല്പന്നം കൊണ്ടാണ് മുത്തച്ഛൻ ഇപ്പോഴും പല്ല് തേക്കുന്നത്. ആദ്യമൊക്കെ മകൾ അമേരിക്കയിലേക്ക് പോകുമ്പോഴൊക്കെ കൊടുത്തു വിടുമായിരുന്നു. അവൾക്ക് അത്ര താല്പര്യമില്ല എന്നു മനസ്സിലാക്കിയപ്പോൾ പിന്നീട് നിർബന്ധിക്കാൻ പോയില്ല.. അല്ലെങ്കിൽ തന്നെ ഒന്നിനും ഒരു കാലത്തും കുട്ടികളെ വൈദ്യൻ നിർബന്ധിച്ചിട്ടില്ല. പറഞ്ഞു കൊടുക്കും അത്ര മാത്രം. പ്രകൃതി അവരെ പ്രാപ്തരാക്കി വളർത്തിക്കൊള്ളും എന്ന കാര്യത്തിൽ അയാൾക്ക് നല്ല ഉറപ്പാണ്. വൈദ്യന്റെ ചികിത്സയും അങ്ങനെ തന്നെ. എല്ലാം സ്വയം ശരിയാകാനുള്ള സമയം കൊടുക്കും. ആദ്യത്തെ ഊഴം പ്രകൃതിക്ക്. ശരിയായില്ലെങ്കിൽമാത്രം മനുഷ്യൻ ഇടപെടുക. അതാണ് ശീലം. അന്നും ഇന്നും. പക്ഷേ ആളുകൾക്ക് അത് പോരാ. അവർക്ക് ഫലം ഉടനെ വേണം. അങ്ങനെ കരുണാകരൻ വൈദ്യനെ ആൾക്കാർ വിസ്മരിച്ചു.

ഔഷധ ശാല പുട്ടിയിറങ്ങിയപ്പോൾ വൈദ്യൻ ഒരു കാര്യം വീണ്ടും ഓർത്തു. ആദ്യമായാണ് അവൾ തന്നെ ഇവിടെ നിന്നും കുട്ടികൊണ്ടു പോകാൻ എത്തുന്നത്. ഒരു പക്ഷേ പിറന്നാൾ ആയത് കൊണ്ടായിരിക്കും.

മകൾ ഓടിക്കുന്ന വണ്ടിയുടെ പുറകിലെ സീറ്റിൽ ഇരുന്നു യാത്ര ചെയ്യുമ്പോൾ പിന്നോക്കം പാഞ്ഞ മെട്രോ റെയിൽ

തൂണുകളോടൊപ്പം ഓർമ്മകൾ ചേർന്നു. ഈ തൂണിന്റെ നമ്പർ ആണ് ഇപ്പോഴു ഇവിടുത്തുകാരുടെ വിലാസത്തിന്റെ പ്രധാന ഭാഗം. പണ്ട് അത് ഏതെങ്കിലും ഇടവഴിയുടെയോ തോടിന്റെയോ പേര് ആയിരുന്നു. അന്ന് ടാറിട്ട റോഡ് തന്നെ ചുരുക്കം. ഇട റോഡുകൾ എല്ലാം ചെമ്മൺ പാതകൾ കോൺക്രീറ്റ് മതിലുകളുടെ സ്ഥാനത്ത് വേലി ആയിരുന്നു. ഓരോ വീടിന്റെയും മുൻപിലെ വേലികളിൽ അവരവരുടെ അടയാളം പോലെ വിവിധ തരത്തിലുള്ള പൂവുകൾ. കനകാംബരം മുതൽ പത്തുമണി പുഷ്പം വരെ. രാവിലെ വൈദ്യശാലയിലേക്ക് പോകുമ്പോൾ എതിരേൽക്കാൻ പത്തു മണി പുഷ്പവും തിരികെ വീട്ടിലേക്ക് വരുമ്പോൾ സ്വീകരിക്കാൻ നാലുമണി പുഷ്പങ്ങളും. വേലികളിൽ ഇടയ്ക്കിടെ പൂച്ച വാലൻ പൂവുകൾ ഇളകി കളിക്കുന്നത് കാണാൻ രസമുണ്ടായിരുന്നു. ഇന്ന് അതൊന്നും ഇല്ല. എങ്കിലും പരാതി ഇല്ല. കാലം മാറുകയല്ലേ. 'അച്ഛാ നമുക്ക് അമ്പലത്തിൽ ഒരു ദർശനം നടത്തിയിയിട്ടു വീട്ടിലോട്ട് പോയാലോ. പിറന്നാളല്ലേ'

'ഞാനില്ല.'  
ഒറ്റ വാക്കിൽ ഉത്തരം. ഇന്നേവരെ ഒരു പിറന്നാളിനും ഒരിടത്തും പോയിട്ടില്ല. ഇനി അതിന്റെ ആവശ്യവുമില്ല. അത് അവൾക്ക് അറിയുകയും ചെയ്യാം. എന്നാലും ചോദിക്കേണ്ട ഉത്തരവാദിത്വം ഉള്ളതുകൊണ്ടു മാത്രമാണ് ഈ ചോദ്യം. ഇനി നാളെ ഒരു കാലത്ത് ചോദിച്ചില്ലല്ലോ എന്ന സങ്കടം ഉണ്ടാകരുത്. അത്ര മാത്രം. അമ്മയുണ്ടായിരുന്നപ്പോ എല്ലാ പിറന്നാളിനും അതിരാവിലെ ദർശനത്തിന് പോയിരുന്നതൊക്കെ അവളുയവിറക്കുന്നുണ്ടാകണം..

വീട്ടിൽ എത്തിയപ്പോ തന്നെ വൈദ്യൻ പാതി മയക്കത്തിലായി. എല്ലാ കാലത്തും വൈദ്യന്റെ ഏറ്റവും വിലയേറിയ

സ്വത്തുതും ഈ മയക്കം തന്നെ ആയിരുന്നു. അത് തലമുറയായി പകർന്നു കിട്ടിയതാണ്. ഒന്നിനോടും അധിക ആഗ്രഹമോ അനിഷ്ടമോ ഇല്ലായ്ക. ഒരു തരം നിസ്സംഗത. അതിനാൽ തന്നെ ആഗ്രഹിക്കുന്ന നിമിഷത്തിൽ തന്നെ ഉറക്കം വന്നു തഴുകും. പക്ഷേ ഇന്ന് മയക്കത്തിൽ വീണ ഉടനെ അടക്കി നിറുത്തിയിരുന്ന ഓർമ്മകളുടെ അടരുകൾ എങ്ങനെയോ മനസ്സിന്റെ നിയന്ത്രണം ഭേദിച്ചു സ്വതന്ത്രരായി. അവ ഒരു യാഗാശ്വത്തേപ്പോലെ അങ്ങും ഇങ്ങും പാഞ്ഞു. അനേകം വേനലും വറുതിയും വർഷവും വൃഷ്ടിയും അവിടെ ഇട കലർന്നു. വേനലിൽ ഒരു കുടം വെള്ളത്തിന് വേണ്ടി മൈലുകൾ നടന്നതും മഴക്കാലത്ത് പെരുവെള്ളത്താൽ പൊറുതി മുട്ടിയതുമാകെ. ആർത്തലച്ച് വന്ന ഓർമ്മകളുടെ തിരതള്ളലിൽ പെട്ടുപോയ വൈദ്യൻ ശ്വാസം കിട്ടാതെ പിടഞ്ഞു.

'അച്ഛാ കുടിക്കാൻ ചൂട് വെള്ളം'.  
മകൾ അടുത്തു വന്നു വിളിച്ചു. ഉത്തരമില്ലാത്തത് കൊണ്ട് അവൾ വീണ്ടും പറഞ്ഞു. 'അച്ഛാ ചൂട് വെള്ളം'. കിടക്കുന്നതിന് മുമ്പ് പതിവുള്ള ചൂട് വെള്ളവുമായി വന്നതാണ് അവൾ. ഏത് രോഗിക്കും കരുണാകരൻ വൈദ്യൻ നിൻദേശിക്കുന്ന ആദ്യത്തെ മരുന്നും ഇത് തന്നെ. ചൂട് വെള്ളത്തിൻ ഒരു കുളിയും ഭക്ഷണത്തിന് ഒരു മണിക്കുറിന് ശേഷം കുടിക്കാൻ ഒരു ഗ്ലാസ്സ് ചൂട് വെള്ളവും. ഒരു മാതിരി രോഗങ്ങളൊക്കെ അതിൽ അലിഞ്ഞു ഇല്ലാതാകുമത്രേ. വെള്ളം വാങ്ങുന്നതിന് പകരം കണ്ണു തുറക്കാതെ വൈദ്യൻ അപ്രതീക്ഷിതമായി അലറി പറഞ്ഞു. 'മാറി നില്ക്കൂ'. അവൾ അദ്ദേഹത്തെപ്പറ്റി. അച്ഛൻ എന്താണ് ഈ പറയുന്നത്. അവൾ വീണ്ടും പറഞ്ഞു. 'അച്ഛാ, ഇത്. വെള്ളം'. 'നായെ, മാറി നില്ക്കൂ'. വൈദ്യന്റെ പതറിയ ശബ്ദം വീണ്ടും അത്

തന്നെ ആവർത്തിച്ചു. അവർക്ക് ഒന്നും മനസ്സിലായില്ല. അൽദുതം അമ്പരപ്പിന് വഴി മാറി. ഇന്നേ വരെ എടീ എന്നു പോലും വിളിക്കാത്ത ആ അച്ഛനാണ് നായെ എന്നു വിളിക്കുന്നത്. അച്ഛന്റെ മുഖത്ത് ഏതൊക്കെ യോ അസ്വസ്ഥതകളുടെ വേലിയേറ്റം അവർ കണ്ടു. ഇതുവരെയും ആ മുഖത്ത് കാണാത്ത ഒന്ന്. അറുപത് വർഷങ്ങൾക്ക് മുൻപ് ഉണ്ടായ വെള്ളപ്പൊക്കത്തിൽ നിന്നു രക്ഷപ്പെട്ട അവസ്ഥ ഒന്നുകൂടി അനുഭവിക്കുകയായിരുന്നു വൈദ്യന്റെ മനസ്സ് അപ്പോൾ. ഓർമ്മകളുടെ നീർക്കയത്തിൽ നിന്നു കുതിരി തെറിച്ച് പുറത്തു വന്ന വൈദ്യൻ പെട്ടെന്നു ഉണർന്ന് വിഹ്വലതയോടെ നിർന്നിമേഷയായി നോക്കി നിന്ന മകളോടു ചോദിച്ചു.

'എനിക്കു എന്തു പറ്റി. എന്റെ സാമ്പൻ എവിടെ?'. പിന്നേയും എന്തൊക്കെയോ പുലമ്പി. പിന്നെ അയാൾ കുടുകുടെ വിയർത്തു. വിയർപ്പ് അടങ്ങിയപ്പോൾ മുഖത്ത് അപാരമായ ശാന്തത.

എല്ലാം മനസ്സിലായതുപോലെ ആരോടെന്നില്ലാതെ വൈദ്യൻ പറഞ്ഞു. 'എല്ലാത്തിനും ഒരു കാരണം വേണം'.

'എന്തിനാണച്ഛാ കാരണം'.

'ഇവിടെ നിന്നു കടന്ന് പോകാൻ'.

ആ ഒരു വാചകത്തിൽ എല്ലാം അടങ്ങിയിട്ടുണ്ടായിരുന്നു. വീണ്ടും മയങ്ങിയ വൈദ്യൻ ഉറക്കത്തിന്റെ ഇടവേളകളിൽ ഉണരുമ്പോഴെല്ലാം തന്റെ കൊറ്റിയെ അന്വേഷിച്ചു കൊണ്ടിരുന്നു. കൊറ്റിയെ ആ രാത്രിയിൽ തന്നെ അടുത്തെത്തിച്ചപ്പോൾ അനേക വർഷങ്ങൾ മുൻ നഷ്ടപ്പെട്ട മകളെ കണ്ടു കിട്ടുമ്പോഴുള്ള ആവേശത്തോടെ അയാൾ അതിനെ കയ്യിൽ വാങ്ങിച്ചു, സ്നേഹപൂർവ്വം മെത്തയ്ക്ക് അരികിൽ വച്ചു. കൊറ്റിയെയും പുൽകി മയക്കത്തിൽ വീണു ശാന്തമായി കിടക്കുന്ന അച്ഛനെ കണ്ടപ്പോൾ അവർക്ക്

ഒരേ സമയം സങ്കടവും സന്തോഷവും തോന്നി.

തലമുറകളുടെ ഈ സന്ധിയിൽ അച്ഛന്റെ മുഖത്തേക്ക് നോക്കി നിന്നപ്പോൾ കുട്ടിയായി മാറിയ മകൾ, വീണു കിട്ടിയ ഒരു നിമിഷാർദ്ധത്തിന്റെ ഇടവേളയിൽ, ബാല്യത്തിലേക്ക് ഒരു യാത്ര പോകാൻ ആഗ്രഹിച്ചു. അപ്പോഴേക്കും കൊറ്റിയുമായി വൈദ്യൻ തന്റെ യാത്ര യെല്ലാം അവസാനിപ്പിച്ചിരുന്നു.

**ജിമ്മി ജോസഫ്,  
അസിസ്റ്റന്റ് കമ്മീഷണർ**



# വർണ്ണകാഴ്ചകൾ

ഒരു നീണ്ട പകലിന്റെ അധാനക്ഷീണത്താൽ ഒരു മാത്ര ഞാൻ വിശ്രമിക്കേ  
അകലെ കിളികൾ ചേക്കേറും കലപില ചപലത കേട്ടു കിടന്നു  
ഒരു നിമിഷാർദ്ധമെൻ വാതിൽപ്പടിയിലായ് പദനിസ്വനം കേട്ടുണർന്നു  
കാതോർക്കെ എന്നെ തലോടിയൊരു കൊച്ചു കാറ്റു വലം വച്ചു പോയി  
ഒപ്പമാം മുറ്റത്തെ മുല്ല തൻ പൂമണം ഒത്തിരി എന്നിൽ നിറച്ചു  
തേന്മാവിൻകൊമ്പത്തൊരുകൊച്ചു പൈങ്കിളി കൊക്കു ചരിച്ചെന്നെ നോക്കി  
എന്തിന് നേരത്തേ എന്നു ചോദിക്കവേ വേറുതെയെന്നറിയാതെ ചൊല്ലി  
എന്തോ പുലമ്പി ചിറകടിച്ചാർത്തത് എങ്ങോ പറന്നങ്ങു പോയി

പോയ്‌മറഞ്ഞൊരരന്റെ നിദ്രയെ അലസമായ് തേടി നടന്നെൻ മിഴികൾ  
ജാലകവീഥിയിലൂടെ വർണാഭമാം ചാരു വിഹായസ്സിലെത്തി  
ആകെ തളർന്നു ചുവന്നു തുടുത്തൊരു ആദിത്യദേവനെ കണ്ടു  
പതിയെയണയുന്ന പതിക്കിരുന്നീടുവാൻ പതിവ്രതയാം സന്ധ്യാദേവി  
കമ്പളമൊന്നു കൂടഞ്ഞു വിരിക്കവേ ചിതറുന്നു പലവർണ്ണ ധൂളി  
എന്തൊരു ചന്തമാണീവർണ്ണപ്പൊട്ടുകൾ എല്ലാടവും ചിന്തി പരന്നു  
തുലികയാരാലോ ചിത്രം വരയ്ക്കുന്നീ പലവർണ്ണ കൂട്ടുകൾ ചേർത്ത്  
ആകാശ ക്യാൻവ്യാസ്സിലെത്ര മനോജ്ഞമായ് ആരും കൊതിച്ചങ്ങു പോകും  
മേഘ ശകലങ്ങൾഅംബുധി തീരത്ത് തോണി തുഴഞ്ഞു നടന്നു  
കുന്നും മലകളും മനുഷ്യരുപങ്ങളും ചിന്തിച്ചു നോക്കുകിൽ കാണാം

മായികലോകമതോന്നിൽ മയങ്ങി ഞാൻ മറ്റേതോ ലോകത്തിലെത്തി  
കുന്നിറക്കത്തിൽ പൊടുന്നനെ വീണപോൽ മെല്ലെ നടങ്ങി ഉണർന്നു

എങ്ങെവിടെ പോയ്‌മറഞ്ഞൊരാവർണ്ണത്തിൻ സിന്ദൂര കാഴ്ചകളെല്ലാം  
മാഞ്ഞു മറഞ്ഞതിൻ മേലെ കറുത്തൊരു കട്ടി കരിമ്പടം ചാർത്തി  
രാത്രിയാം രാക്ഷസനെത്തി പതിവുപോൽ രാജാവ്‌ഞാനെന്നു ചൊല്ലി

കൺചിമ്മി നോക്കവേ മെല്ലെ തെളിഞ്ഞൊരു പുഞ്ചിരി പാലോളി പോലെ  
വെണ്ണിലാ പാൽക്കൂടം പൊട്ടി പരന്നു പോയ് എൻ മനക്കണ്ണും നിറഞ്ഞു

പേടിയില്ലെന്നോതി മെല്ലെ തിളങ്ങുന്നു പുവോളി പാൽനിലാ ചന്ദ്രൻ

വർണ്ണിക്ക വയ്യ മധുരമാം പൊൻകിനാ ചന്ദന തോണിയിലേറി  
നോക്കിച്ചിരിപ്പു മാലോകരെ നിങ്ങൾ തൻ വേദന തെല്ലു മറക്കു  
കാവലായ് ഞാനുണ്ടെന്നേർത്ത തലോടലിൽ ചേർന്നു മയങ്ങി ഉറങ്ങു  
ഞാനുമുറങ്ങുകയാണിനി നാളത്തെ സുര്യോദയം കണ്ടുണരാൻ

ഗീത കുമാരി  
സുപ്രഭാ



# ഇവേ ബിൽ എന്നാലെന്താണ് ?

ചരക്കു സേവന നികുതി സമ്പ്രദായം ലക്ഷ്യമിടുന്ന ഒരു രാജ്യം, ഒരു കമ്പോളം, ഒരു നികുതി എന്ന അനുചര ക്രമ വികൃത വിശ്വാസ പ്രമാണത്തിലേക്കുള്ള മറ്റൊരു സുപ്രധാന ചുവടു വെയ്പ്പാണ് ഇവേ ബിൽ സംവിധാനം.

ഒരു വ്യവഹാര നിർവഹണം (Taxable Supply) അതിനുപയോഗിക്കുന്ന ഗതാഗത വാഹനവിവരം ഉൾപ്പെടെയുള്ള പൊതു കാര്യങ്ങൾ രേഖപ്പെടുത്തി ചരക്കു ഗതാഗതം ആരംഭിക്കുന്നതിന് മുൻപായി കമ്പ്യൂട്ടർ സഹായത്തോടെ ഉണ്ടാക്കി വാഹനത്തിൽ സൂക്ഷിക്കേണ്ടുന്ന ഒരു പ്രധാനപ്പെട്ട യാത്ര രേഖയാണ് ഇവേ ബിൽ.

ജി. എസ്.ടി നിയമപ്രകാരം അവതിനായിരത്തിൽ കൂടുതൽ വിലയുള്ള സാധന സാമഗ്രികൾ ഒരിടത്തുനിന്നും മറ്റൊരിടത്തേക്ക് കൊണ്ടു പോകേണ്ടി വരുന്ന സാഹചര്യങ്ങളിൽ ഇന്റർനെറ്റ് ഉപയോഗിച്ച് എടുക്കേണ്ടുന്ന യാത്രാ രേഖയാണ് ഈ വേ ബിൽ. 2018 ഫെബ്രുവരി ഒന്നുമുതൽ ഈ വേ ബിൽ നിർബന്ധിതമായ യാത്രാ രേഖയാണ്. വാറ്റ് നിയമത്തിൽ ചരക്കു നീക്കവുമായി ബന്ധപ്പെട്ടു നിലനിന്നിരുന്ന വേ ബിൽ' സംബന്ധമായി സാധന സാമഗ്രികൾ ജോബ് വർക്കിനായ് അയക്കുമ്പോഴും ജി.സ്.ടി. രജിസ്ട്രേഷൻ എടുക്കേണ്ടാത്തവർ കരകൗശലവസ്തുക്കൾ പോലെയുള്ളവ മറ്റു സംസ്ഥാനങ്ങളിലേക്ക് അയക്കുന്ന സന്ദർഭങ്ങളിലും ഇ വേബിൽ നിർബന്ധമാണ്.

## ഇവേ ബിൽ എങ്ങനെ ഉണ്ടാക്കും:

സപ്ലയർക്കും ,സ്വീകർത്താക്കൾക്കും ട്രാൻസ്പോർട്ടർക്കും ഇ വേബിൽ ഉണ്ടാക്കാവുന്നതാണ്. ഈ വ്യവസ്ഥയിൽ നികുതി ദായകൻ, താൻ ഒരു വാഹനത്തിൽ നടത്തുവാൻ ഉദ്ദേശിക്കുന്ന ചരക്കു നീക്കവുമായി ബന്ധപ്പെട്ട വിവരങ്ങൾ ഡിപ്പാർട്ട്മെന്റ് സെർവറിലേക്ക്(<http://ewaybill.nic.in>) ഇന്റർനെറ്റ് ഉപയോഗിച്ച് അപ്ലോഡുചെയ്യുന്നു. ഈ വിവരങ്ങൾ പ്രകാരം ജി.സ്.ടി സെർവർ ഒരു 12 അക്ക യൂണിക് നമ്പറും( EBN), QR കോഡും രേഖപ്പെടുത്തിയിട്ടുള്ള ഡെലിവറി നോട്ട് ഓട്ടോമാറ്റിക്കായി ജനറേറ്റ് ചെയ്യുന്നു. ഇപ്രകാരം ലഭിച്ച ഇ വേബിൽ പ്രസ്തുത ചരക്കു വാഹനത്തിന്റെ ആ യാത്രയ്ക്കുള്ള അംഗീകൃത രേഖയായി ഇന്ത്യയിൽ ഉടനീളം കണക്കാക്കുന്നതാണ്. അങ്ങിനെ ചരക്കു ഗതാഗതം ആവിഹണം, സുഗമവും സുതാര്യവും ആയ രീതിയിൽ നടപ്പാക്കുന്നതാണ്. ഒരൊറ്റ ഇ വേബിൽ ഉപയോഗിച്ച് ഇന്ത്യയിലെവിടേക്കും ചരക്കു നീക്കം നടത്തുവാൻ ഈ സമ്പ്രദായം സഹായിക്കുന്നു. സംസ്ഥാന അന്തർ സംസ്ഥാന ചരക്കു നീക്കത്തെ ഈ വേ ബിൽ സംവിധാനം എത്രമാത്രം സഹായിക്കും എന്നത് ജി.സ്.ടി യുടെ വിപ്ലവകരമായ പ്രേരണകളിൽ ഒന്നുമാത്രമാണ്.

കച്ചവടക്കാർക്കും മറ്റും തങ്ങൾക്കാവശ്യമായ ഇ വേ ബില്ലുകൾ അതാതു സമയങ്ങളിൽ ഓൺലൈൻ വഴി ഉണ്ടാക്കാവുന്നതാണ്. അതിൽ ഉപയോക്താവിനെ സംബന്ധിച്ച വിവരങ്ങൾ ചേർക്കേണ്ടതിനാൽ സുതാര്യത, സത്യസന്ധത, കാര്യക്ഷമത എന്നിവ വ്യവഹാര നിർവഹണത്തിൽ പ്രതീക്ഷിക്കപ്പെടുന്നു.

## ഇവേ ബില്ലിലെ വിവരങ്ങൾ:

സ്വീകർത്താവിന്റെ രജിസ്ട്രേഷൻ നമ്പർ, ഉരുപ്പടികൾ കൊണ്ടുപോയി കൊടുക്കേണ്ടുന്ന

സ്ഥലനാമം, ഇൻവോയ്സ് നമ്പർ, ഇൻവോയ്സ് തീയതി, വില വിവരങ്ങൾ, HSN കോഡ് മുതലായവ വിവരങ്ങൾ ഇവേ ബിൽ തയ്യാറാക്കുന്ന സമയത്തു നൽകേണ്ടുന്നതാണ്.

ഇവേ ബില്ലിന് രണ്ടു ഭാഗങ്ങളാണുള്ളത്. സ്വീകർത്താവിന്റെ വിവരങ്ങൾ, സാധന സാമഗ്രികൾ എത്തിക്കേണ്ടുന്ന സ്ഥല വിവരം, ഇൻവോയ്സ് വിവരങ്ങൾ, വില വിവരം, HSN കോഡ്, ഗതാഗത ഉപാധി വിവരങ്ങൾ (റയിൽവേ ബിൽ വിവരങ്ങൾ, എയർ വേബിൽ വിവരങ്ങൾ, കപ്പലിൽ ചരക്ക് കയറ്റിയതിന്റെ റെസിപ്റ്റ് / ബിൽ ഓഫ് ലാഡിങ്) മുതലായ വിവരങ്ങളാണ് ഒന്നാമത്തെ ഭാഗമായ പാർട്ട് എയിൽ ചേർക്കേണ്ടത്. പാർട്ട് ബിയിൽ വാഹനത്തെ സംബന്ധിച്ച (രജി. നമ്പർ) വിവരങ്ങൾ ഉൾക്കൊള്ളിക്കണം. GST രജിസ്ട്രേഷനു ഇവരാണ് പാർട്ട് എ ഭാഗം പുരിപ്പിക്കേണ്ടത്. ഈ വിവരങ്ങൾ കോമൺ പോർട്ടലിൽ നിന്നും രജിസ്റ്റേർഡ് സപ്ലൈർക്കു FORM GSTR-1 നൽകുന്നതിന് ഉപയോഗിക്കാവുന്നതുമാണ്. GSTR-1 റിട്ടേണുകൾ ഓട്ടോമാറ്റിക് ആയി കമ്പ്യൂട്ടർ വഴി ഉണ്ടാക്കപ്പെടുന്നതിനാൽ അതിനായി സമയം ചിലവാക്കേണ്ടതില്ല.

**പരസ്പര ധാരണയും അംഗീകാരവും:**

ഒരു രജിസ്റ്റേർഡ് വ്യക്തിക്ക് തന്റെ പേരിൽ ഉണ്ടാക്കപ്പെടുന്ന ഇവേബില്ലുകൾ സംബന്ധിച്ച വിവരങ്ങൾ സിസ്റ്റം അപ്പോഴപ്പോൾ തന്നെ നൽകുന്നതാണ്. ആയതിനാൽ തന്റേതല്ലാത്ത ഇവേ ബില്ലുകൾ അവർക്കു തിരസ്കരിക്കാവുന്നതാണ്. അതുപോലെ തന്റെ ഉപജീവനക്കാരോ ബ്രാഞ്ചുകളോ ഉണ്ടാക്കുന്ന ഇവേബില്ലുകൾ പരിശോധിച്ചു മാറ്റങ്ങൾ വരുത്തുവാനും ആവശ്യമെങ്കിൽ അത് അസ്ഥിരപ്പെടുത്തുന്നതിനും ഒരു രജിസ്റ്റേർഡ് വ്യക്തിക്ക് കഴിയുന്നതാണ്.

ഇവേ ബിൽ സ്വീകർത്താവ് അഥവാ ഗുണഭോക്താവ് ജി.സ്.ടി രജിസ്ട്രേഷൻ ഉള്ള ആളാണെങ്കിൽ, കോമൺ പോർട്ടലിൽ ഇതുമാധ്യമ ബന്ധപ്പെട്ടു തന്നിട്ടുള്ള ലിസ്റ്റിലെ വിവരങ്ങൾ പരിശോധിച്ച ശേഷം ഇവേ ബിൽ പ്രകാരം അയക്കുവാനുദ്ദേശിക്കുന്ന ചരക്ക് തന്നെ തന്നെ വേണ്ടിയുള്ളതാണ് എന്ന്

അംഗീകാരം നൽകേണ്ടതാണ്. തന്റെ പേരിൽ മറ്റൊരാൾ തയ്യാറാക്കിയ ഇവേ ബില്ലുകൾ തന്റേതല്ലെങ്കിൽ അവ നിഷേധിക്കുവാനുള്ള അധികാരം സപ്ലൈർക്കും, സ്വീകർത്താക്കൾക്കും ഉണ്ടായിരിക്കുന്നതാണ്. ഇവേ ബിൽ തിരസ്കരണം അല്ലെങ്കിൽ അംഗീകരണം സംബന്ധിച്ച ആശയവിനിമയം, ബിൽ തയ്യാറാക്കി 72 മണിക്കൂറിനകം നടത്തിയിരിക്കേണ്ടതാണ്. അല്ലാത്ത പക്ഷം പ്രസ്തുത ബിൽ അംഗീകരിച്ചതായി നിരൂപിക്കപ്പെടുന്നതാണ്.

**കാലാവധി:**

ഇവേ ബില്ലിന്റെ നിയമ പ്രകാരമുള്ള സാധുത അതിലെ സാധന സാമഗ്രികൾ യാത്ര ചെയ്ത് എത്തിച്ചേരേണ്ടുന്ന സ്ഥലത്തേയ്ക്കുള്ള ദൂരത്തെ ആശ്രയിച്ചിരിക്കുന്നു. സാധാരണ 100 കിലോ മീറ്ററിൽ താഴെ ദൂരം യാത്ര ചെയ്യേണ്ടുന്നവയുടെ കാലാവധി ഒരു ദിവസമാണ്. പിന്നീടുള്ള ഓരോ 100 കിലോ മീറ്ററിനും ഓരോ ദിവസം എന്ന നിലയിൽ കാലാവധി ലഭിക്കുന്നതാണ്. ഇവേ ബിൽ തയ്യാറാക്കിയ സമയം അടിസ്ഥാനമാക്കിയാണ് 24 മണിക്കൂർ ദിവസ കാലാവധി തീരുമാനിക്കുന്നത്. ഏതെങ്കിലും കാരണവശാൽ ചരക്കു നീക്കം താമസിച്ചുപോയാൽ ട്രാൻസ്പോർട്ടർ പുതിയ ഇവേ ബിൽ ഉണ്ടാക്കേണ്ടതാണ്. ഇതിനായി പാർട്ട് ബിയിലെ GSTEWB-01 ഫോറം പരിഷ്കരിക്കാവുന്നതാണ്.

ജി.സ്.ടി. അധികാരികൾ വാഹനങ്ങൾ വഴിക്കു തടഞ്ഞു നിർത്തി ഇവേ ബില്ലുകളോ/ഇവേ നമ്പറുകളോ പരിശോധിക്കുന്ന സമയ പരിധി മുഴുതു മിനുട്ടിൽ കൂടുതലാണെങ്കിൽ, വാഹനത്തിന്റെ അധികാരി ആ വിവരം നിർദിഷ്ട ഫോർമാറ്റിൽ ഓൺലൈനായി കോമൺ പോർട്ടലിൽ നൽകേണ്ടതാണ്.

ഇവേബില്ലുകളിലെ QR ബാർ കോഡ് ഉപയോഗിച്ചാണ് പരിശോധനകൾ നടത്തുന്നത്. ചരക്കു വാഹനം തടഞ്ഞു നിർത്താതെ തന്നെ ആ വാഹനത്തിന്റെ റേഡിയോ ഫ്രീക്വൻസി റിഡിംഗിന് (RFID) ഉപയോഗിച്ച് അതിലെ ഇവേ ബില്ലും സാധന സാമഗ്രികളും താരതമ്യ പരിശോധന നടത്താവുന്നതാണ്. ഇവേ ബില്ലുകളുടെ

പരിശോധനകൾ സിസ്റ്റം വഴി നടത്തുന്നതിനാൽ ഇടപാടുകളിൽ കൃത്യത കൈവരിക്കുവാനാകുന്നതാണ്.

**സംയോജിത ഇ വേബില്ലുകൾ:**

ട്രാൻസ്പോർട്ടർമാർക്ക് തങ്ങളുടെ പേരിൽ ഏല്പിക്കപ്പെട്ടിട്ടുള്ള വിവിധ സപ്ലയർമാരുടെ ഇവേബില്ലുകൾ കൂട്ടിച്ചേർത്ത് സംയോജിത ഇ വേബില്ലുകൾ (consolidated) ഉണ്ടാക്കാവുന്നതാണ്. ഇത്തരം ഇ വേബില്ലുകളിൽ വ്യക്തിഗത ഇ വേബില്ലുകളുടെ വിവരങ്ങൾ ഉൾപ്പെടുത്താവുന്നതിനാൽ പലതിനു പകരം ഒരു ബിൽ മാത്രം വാഹനത്തിന്റെ അധികാരി സൂക്ഷിച്ചാൽ മതിയാകും. അത് പോലെ ട്രാൻസ്പോർട്ടർമാരുടെ പേരിൽ മറ്റുള്ളവർ ഉണ്ടാക്കിയിട്ടുള്ള ഇ വേബില്ലുകളിൽ നിർദിഷ്ട വാഹന നമ്പറുകൾ ഉൾപ്പെടുത്തി പരിഷ്കരിക്കാവുന്നതാണ്. ഇത് മൂലം ഒരു വാഹനത്തിൽ പല വ്യക്തികളുടെ സാധന സാമഗ്രികൾ ഒരു ഇ വേ ബിൽ ഉപയോഗിച്ച് കൊണ്ടുപോകാവുന്നതാണ്.

സാധാരണ അമ്പതിനായിരത്തിൽ കൂടുതൽ വിലയുള്ള ചരക്കു ഗതാഗതത്തിന് ഇവേ ബിൽ നിർബന്ധമാണ്. ചില സാഹചര്യങ്ങളിൽ ഒരു ഇൻവോയ്സിൽ രേഖപ്പെടുത്തിയ ഉരുപ്പടി പല വാഹനങ്ങളിലായി കൊണ്ടുപോകേണ്ടതായി വരുമല്ലോ? അത്തരം സാഹചര്യങ്ങൾക്കായി ഓരോ വാഹനത്തിനും ഇ വേ ബിൽ ഉണ്ടാക്കി ഇൻവോയ്സിൽ സാക്ഷ്യപ്പെടുത്തി യാത്ര ആരംഭിക്കാവുന്നതാണ്.

**ഇവേ ബിൽ രെജിസ്ട്രേഷൻ:**

നികുതി ധായകർക്കു വളരെ ലളിതമായ രീതിയിൽ ഇ വേ ബിൽ രെജിസ്ട്രേഷൻ എടുക്കാവുന്നതാണ്. ആദ്യം ഈ ആവശ്യത്തിലേക്കായി ജി.സ്.ടി കോമൺ പോർട്ടലിൽ രെജിസ്ട്രേഷൻ എടുക്കേണ്ടതാണ് (<http://ewaybill.nic.in>). ഇതിന് ജി.സ്.ടി രെജിസ്ട്രേഷൻ നമ്പറും ജി.സ്.ടി സിസ്റ്റത്തിൽ രെജിസ്റ്റർ ചെയ്തിട്ടുള്ള മൊബൈൽ ഫോൺ നമ്പറും ആവശ്യമാണ്.

കമ്പ്യൂട്ടറിൽ ഇവേ ബിൽ പോർട്ടലിൽ രെജിസ്ട്രേഷൻ ലികിലൂടെ ഇവേ ബിൽ രെജിസ്ട്രേഷൻ ഫോം കാണാവുന്നതാണ്. ഇതിൽ GSTIN നമ്പർ, അപേക്ഷകന്റെ പേര്, സ്ഥാപനത്തിന്റെ പേര്, അഡ്രസ്സ്, മൊബൈൽ നമ്പർ എന്നിവ ചേർത്തു കഴിയുമ്പോൾ മൊബൈലിൽ ലഭിക്കുന്ന പാസ് കോഡ് ഉപയോഗിച്ച് യൂസർ നെയിം ഉണ്ടാക്കാവുന്നതും ആ യൂസർ നെയിം സിസ്റ്റം സ്വീകരിക്കുമ്പോൾ പാസ് വേർഡ് ലഭിക്കുന്നതാണ്. നികുതി ധായകന് ആ യൂസർ നെയിമും പാസ് വേർഡും ഉപയോഗിച്ച് ഇ വേ ബിൽ ആവശ്യമുള്ളപ്പോൾ ഉണ്ടാക്കാവുന്നതാണ്. ഒരാൾക്ക് തന്റെ ഉപയോഗത്തിനായി എസ്എംഎസ്, എപിഐ ആപ്ലിക്കേഷനുകൾ, ആൻഡ്രോയിഡ് മുതലായവ ഉപയോഗപ്പെടുത്തി ഇവേ ബില്ലുകൾ സംബന്ധിച്ച ജാഗ്രതാ നിർദ്ദേശങ്ങൾ മൊബൈൽ ഫോണിൽ ലഭ്യമാക്കുന്നതിനുള്ള സൗകര്യങ്ങളും ലഭ്യമാണ്. ഇവേ ബിൽ ഉണ്ടാക്കുന്നതിനും റദ്ദാക്കുന്നതിനും ഉള്ള സൗകര്യങ്ങൾ മൊബൈൽ ഫോൺ ഉപയോഗിച്ച് SMS വഴി ചെയ്യാവുന്നതാണ്.

GST രെജിസ്ട്രേഷൻ ഇല്ലാത്ത ട്രാൻസ്പോർട്ടർമാർ ഇവേ ബിൽ പോർട്ടലിൽ എൻറോൾമെന്റ് ഓപ്ഷനിൽ അവരുടെ ബിസിനസ് വിവരങ്ങൾക്ക് പുറമെ പാൻ നമ്പർ, സ്ഥലം, വിലാസം, ആധാർ ആധികാരികത എന്നിവ കൊടുത്തു എൻറോൾ ചെയ്യേണ്ടതാണ്. അതിനുശേഷം തന്റെ സംസ്ഥാനം തിരഞ്ഞെടുക്കുക, പാൻ കാർഡിലെ പേരും നമ്പറും വാലിയേറ്റ് ചെയ്യുക അപ്പോൾ മൊബൈലിൽ ലഭിക്കുന്ന OTP ഉപയോഗിച്ച് യൂസർ നെയിമും പാസ് വേർഡും ഉണ്ടാക്കാവുന്നതാണ്. അതിനു ശേഷം ആധാർ വിവരങ്ങൾ ഉപയോഗിക്കുവാനുള്ള സമ്മതവും സത്യവാങ്മൂലവും കൊടുത്താൽ ഒരു TRANS ID ലഭിക്കുന്നതാണ്. ഈ ID തങ്ങളുടെ ഇടപാടുകാർക്ക് കൊടുത്തു് ഇവേ ബില്ലിൽ വാഹന നമ്പർ ചേർക്കുന്നതിനായി ട്രാൻസ്പോർട്ടർക്കു കൈമാറാവുന്നതാണ്.

ഇവേ സിസ്റ്റത്തിൽ ഒരാൾക്ക് ആവശ്യമായതും വീണ്ടും വീണ്ടും ഉപയോഗിക്കേണ്ടി വരുന്നതുമായ വിവരങ്ങൾ ഒരു പ്രേത്യേക പൊതു മാസ്റ്റർ ആക്കി സൂക്ഷിക്കാവുന്നതുമാണ്. അതായത് ഇടപാടുകാർ, വിതരണക്കാർ, ട്രാൻസ്പോർട്ടർമാർ,

ഉല്പന്ന വിശദാംശങ്ങൾ മുതലായ ആവർത്തിച്ച് ഉപയോഗിക്കേണ്ടി വരുന്ന വിവരങ്ങൾ യുസർ മാസ്റ്റേഴ്സ് ആക്കി സൂക്ഷിക്കുവാനും കഴിയുന്നതാണ്. യുസർ ID യും പാസ് വേഡും മറന്നുപോകുന്ന പക്ഷം അവ പുനഃ സ്ഥാപിക്കുവാനുള്ള മാർഗവും ഇവേ സിസ്റ്റത്തിൽ ലഭ്യമാണ്.

കേടുപാടുകൾ, അപകടങ്ങൾ മുതലായ ഏതെങ്കിലും കാരണവശാൽ ഉപയോഗത്തിൽ ഇരിക്കുന്ന വാഹനങ്ങൾ മാറ്റേണ്ടി വരുന്ന സാഹചര്യങ്ങളിൽ അതിനുള്ള ഇവേ ബിൽ പരിഷ്കരണ ഓപ്ഷനും ഇവേ സിസ്റ്റത്തിൽ ഉൾപ്പെടുത്തിയിട്ടുണ്ട്. എന്ത് കാരണത്താലാണ് വാഹനം പുനഃക്രമീകരിച്ചതെന്നു പ്രത്യേകം പറഞ്ഞിരിക്കേണ്ടതാണ്. തീവണ്ടിയോ, വിമാനമോ, കപ്പൽ മാർഗമോ ആണ് ചരക്കു ഗതാഗതമെങ്കിൽ വാഹന നമ്പറിന് പകരം ആയാത്രക്കുപയോഗിക്കുന്ന വാഹന രേഖയുടെ നമ്പറാണ് ചേർക്കേണ്ടത്.

വാഹന നമ്പർ രേഖപ്പെടുത്തിയിട്ടില്ലാത്ത ഇവേ ബിൽ ഉപയോഗിച്ച് ചരക്കു ഗതാഗതം നടത്തിയാൽ നിയമസാധ്യത ഉണ്ടായിരിക്കുകയില്ല. ഒരിക്കൽ തയ്യാറാക്കിയ ഇവേ ബില്ലുകൾ തെറ്റുകൾ തിരുത്തുന്നതിനായി എഡിറ്റു ചെയ്യുവാൻ പാടില്ലാത്തതാണ് എന്നാൽ വാഹന നമ്പർ എത്ര തവണ വേണമെങ്കിലും പരിഷ്കരിക്കാവുന്നതാണ്. അതുപോലെ ഇവേ ബിൽ തയ്യാറാക്കി 24 മണിക്കൂറിനുള്ളിൽ റദ്ദുചെയ്യുവാനുമാണ്. ക്യാൻസൽ ചെയ്യുന്നതിനുള്ള കാരണം കാണിച്ചിരിക്കണം എന്നുമാത്രം. ഒരിക്കൽ ക്യാൻസൽ ചെയ്ത ബിൽ പിന്നെ ഉപയോഗിക്കുവാൻ പാടില്ലാത്തതാണ്. അതുപോലെ ഒരിക്കൽ തയ്യാറാക്കിയ ഇവേ ബിൽ

ഡിലീറ്റ് ചെയ്യുവാനും പാടില്ല. ഉദ്യോഗസ്ഥ പരിശോധനക്ക് വിധേയമാകുന്ന സമയത്ത് ആവാഹന നമ്പറും ഇവേ ബില്ലിലെ വാഹന നമ്പറും തമ്മിൽ പൊരുത്തപ്പെട്ടിരിക്കേണ്ടതാണ്.

ഉദ്ദേശിച്ച ചരക്ക് ഗതാഗതം നടക്കാതെ വരുന്ന സന്നർഭങ്ങളിലും ഇവേ ബില്ലിൽ പറഞ്ഞിരിക്കുന്ന പോലെ വ്യവഹാര നിർവ്വഹണം നടപ്പിലാക്കാൻ കഴിയാത്ത സാഹചര്യങ്ങളിലുമാണ് സാധാരണ ഗതിയിൽ ഇവേ ബിൽ ക്യാൻസൽ ചെയ്യാവുന്നത്. ഒരിക്കൽ പരിശോധനക്ക് വിധേയമായ ബില്ലുകൾ ക്യാൻസൽ ചെയ്യുവാൻ പാടില്ലാത്തതാണ്.

**ഒഴിവുകൾ:**

യന്ത്ര സഹായമില്ലാതെ സഞ്ചരിക്കുന്ന വാഹനങ്ങളിൽ ചരക്കു ഗതാഗതം നടത്തുമ്പോൾ ഇവേ ബിൽ നിബന്ധനകൾ ബാധകമല്ല. പോർട്ടുകളിൽ നിന്നും മറ്റും സാധന സാമഗ്രികൾ കസ്റ്റംസ് ക്ലിയറൻസിനായി കൊണ്ടുപോകുമ്പോഴും ഇവേ ബിൽ ആവശ്യമില്ല. സെൻട്രൽ ഗുഡ്സ് ആൻഡ് സെർവീസ് ടാക്സ് നൂൾസ്, 2017 ലെ നൂൾ 138(14) പ്രകാരം ഇവേ ബിൽ ആവശ്യമില്ലാത്ത 138 ഓളം സാധന സാമഗ്രികളുടെ വിവരങ്ങൾ (2017 ആഗസ്ത് 30 ലെ സെൻട്രൽ ടാക്സ് നോട്ടീഫിക്കേഷൻ നമ്പർ.27/2017) പ്രസിദ്ധീകരിച്ചിട്ടുണ്ട്. കൂടുതൽ വിവരങ്ങൾക്ക് [www.cbec.gov.in](http://www.cbec.gov.in); [www.gst.gov.in](http://www.gst.gov.in) എന്നീ വെബ്സൈറ്റുകൾ സന്ദർശിക്കുക.

എം ആർ രാമചന്ദ്രൻ  
സുപ്രണ്ട്





गणतंत्र दिवस 2018 / Republic Day 2018



केंद्रीय राजस्व दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक मीट  
Central Revenue South Zone Cultural Meet 2018



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2018 / International Women's Day Celebrations 2018

